अंतिम हिन्दू

(एक गम्भीर चेतावनी)

जैसा कि ५० वर्ष पहले स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा था लगता है हिन्दू जाति मृत्यु की ओर अग्रसर हो रही है। कदाचित् २३०० ई० तक भारत में हिन्दू अल्पसंख्यक हो जायेंगे। उसके पश्चात् उनकी संख्या में तीव्र ह्रास होगा और हमारी इस प्राचीन भूमि से हिन्दू विलुप्त हो जायेगा। हो सकता है हिन्दू धर्म में कुछ त्रुटियाँ भी हों परन्तु उसमें कुछ 'बहुमूल्य' भी हैं। पिछले एक सहस्त्र वर्षों में हिन्दुओं की वज्रमूर्खता, सामाजिक गैर–मिलन–सारी और कायरता के कारण वह 'बहुमूल्य' भी जो समस्त मानवता की विरासत है लुप्त हो जायेगा और मुझे यही कष्ट सालता है।

(मधु लिमये)

यह कठोर सत्य है कि हिन्दू मुस्लिम अनुपात में घोर बदलाव और उभरते मुस्लिम कट्टरवाद और हठ धर्मी के कारण भारत में गैर–मुसलमानों के सामने दो ही विकल्प है : हिन्दू राष्ट्र अथवा दारुल इस्लाम।

(बलजीत राय अवकाश प्राप्त महानिदेशक पुलिस)

लेखक तथा संकलनकर्ता
– पुरुषोत्तम

हामिद दलवई की पुस्तक मुस्लिम पालिटिक्स इन सेक्युलर इन्डिया से उद्धृत

अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर से अपनी बातचीत का उल्लेख करते हुए श्री हमीद दलवई ने लिखा है–

'परिवार नियोजन के मुद्दे पर अपनी बात दो टूक कहते हुए प्रोफेसर ने कहा कि हिन्दू सदा हमको अल्पसंख्यक बनाकर नहीं रख सकते। कनाडा का उदाहरण देते हुए उसने कहा कि क्यूबेक का सवाल कैसे उठा ? वहां रहने वाले प्रोटेस्टेन्ट अंग्रजों ने परिवार नियोजन किया किन्तु फ्रेंच केथालिकों ने परिवार नियोजन करना स्वीकार नहीं किया और न अब करते हैं। नतीजा यह हुआ कि क्यूबेक में फ्रेंच कैथालिकों की जनसंख्या प्रोटेस्टेन्ट अँग्रेजों से बढ़ गई। अब फ्रेंच कैथालिकों का बोलबाला है। वह अपने हितों की रक्षा स्वयं कर सकते हैं। हम मुसलमानों को भी वैसा ही करना चाहिये। आज नहीं तो ५० साल, पचास नहीं तो १०० साल बाद भारत इस्लामी सैलाब में डूब जायेगा।'

भारत के अन्य मुसलमान लीडर भी घुमा फिरा कर वही बात कहते हैं। वह कहते हैं कि हमारा मजहब परिवार नियोजन की इजाजत नहीं देता है। हमें अपने मजहब पर चलने दिया जाए।"

नग्न सत्य यह है कि हिन्दू समाज में मुस्लिम साम्प्रदायिकता की चुनौती का सामना करने की शक्ति और सामर्थ्य का नितान्त अभाव है।

मुस्लिम राय के नुमाइन्दा अखबार 'रेडियन्स' ने पिछली जनगणना पर अपनी राय जाहिर करते हुए लिखा है –

'बीते दशक में मुसलमानों की आबादी हिन्दुओं से ६ प्रतिशत अधिक बढ़ी है इसलिये
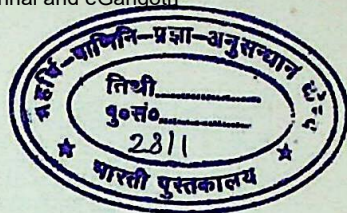
अंतिम हिन्दू

ले. पुरुषोत्तम

एक समय भंयकर बाढ़ आई। लोग जान बचाने के लिये ऊंची जगहों पर, पेडों पर, और मकान की छतों पर जा बैठे। फिर उन लोगों को बाढ़ से निकालने का कार्य प्रारम्भ हुआ। कुछ साहसी लोग तैर–तैर कर उन बाढ़ ग्रस्त लोगों के पास जाते और उन्हें सहारा देकर बाहर निकाल ले आते।

स्थानीय गिरजाघर के पादरी भी चर्च की गगन चुम्बी मीनार पर चढ़े बैठे थे। कुछ लोग तैर कर उनके पास पहुँचें और उन्हें बाहर निकालने का प्रस्ताव किया। "मुझे अपने परमेश्वर पर विश्वास हैं" पादरी ने कहा। "वह मुझे बचायेगा।"वह लोग चले गये।

पानी और बढ़ गया तो नावें लाई गईं। नाव लेकर एक नाविक पादरी के पास पहुँचा। "सम्मानित पिता ! पानी बढ़ रहा है। नदी की धारा भी तेज होती जा रही है। आप नाव में उतर आइये। अभी समय है। सब लोग निकाले जा चुके हैं। आप ही शेष हैं," उसने पादरी को आवाज़ लगाई। पादरी ने चिल्ला कर कहा "क्या तुझे प्रभु में भरोसा नहीं है ? मुझे उसका पूरा भरोसा है। वह मुझे मरने नहीं देगा।" नाविक चला गया।

पानी और बढ़ गया । धारा तेज़ हो गई। अब नाव का जाना भी दुष्कर हो गया। पादरी मीनार पर शांति पूर्वक बैठा प्रभु का स्मरण कर रहा था। शासन को पता चला तो तुरन्त एक हेलीकाप्टर पादरी को निकाल लाने के लिये भेजा गया। हेलीकाप्टर चालक ने एक रस्सी पादरी की ओर गिराई और चिल्ला कर कहाः "पिता ! रस्सी कस कर पकड़ लो। मैं आपको ऊपर खींच लेता हूँ। रात होने वाली है। सूर्योदय से पहले अब दूसरा कोई साधन उपलब्ध न हो सकेगा। " पादरी को उन लोगों के अविश्वास पर बहुत क्रोध आया। उसने कहा "कैसा मूर्ख है तू ? तू मुझे क्या बचायेगा ? मेरा परमेश्वर क्या मुझे नष्ट हो जाने देगा ? मैने जीवन भर उसका स्मरण किया है। मुझे उसमें पूर्ण विश्वास है।" हेलीकाप्टर वापिस चला गया। रात्रि में नदी की तेज़ धारा ने उस मीनार को धराशायी कर दिया। पादरी मर कर परमात्मा के सामने पहुँचा। उसने दोनों हाथ उठाकर कहा, "पिता ! मैने सदा तेरा स्मरण किया। कोई पाप नहीं किया। तुझ पर पूर्ण विश्वास किया और तूने मुझे नदी में डूब जाने दिया। संसार में कैसी बदनामी होगी तेरी ? सब कहेंगे भगवान ने उसकी रक्षा नहीं की जिसने केवल उसी में विश्वास रखा।"

परमेश्वर हँसा और कहा, "पुत्र ! मेरी बदनामी की चिंता मत कर। मैने तुझे बचाने को तैराक और गोतेखोर भेजे। फिर नाव भेजी। फिर एक हेलीकाप्टर भेजा। बता मै और क्या करता ?" आप हँसेंगे और कहेंगे ! "पादरी मूर्ख था। उसे बचाने को तीन सहायक तो भेजे गये।

परमात्मा और क्या करता ?"

किन्तु इससे भी विस्मयकारी एक कथा और भी है। यह एक पादरी की काल्पनिक कहानी नहीं है। यह हमारी आपकी सत्य कथा है। यह करोड़ों लोगों के एक समाज की कहानी है। हिन्दू समाज की।

जब संसार का अंतिम हिन्दू भगवान के सामने पहुँचा तो पादरी की तरह उसने भी दोनों हाथ उठाकर आरोप लगाया 'पिता ! मेरी जाति ने तेरे लिये विशाल मंदिर बनाये। तेरी सोने हीरों की मूर्तियाँ स्थापित की। करोड़ो रुपये के सोने और अलंकारों से तुझे ढक दिया। करोड़ों रुपये के प्रसाद के भोग तुझे लगा दिये। रात दिन धर्म ग्रन्थों के अखण्ड पाठ किये। तूने विश्राम करने के लिये हमें रात्रि दी थी। हमने उसमें भी जाग-जाग कर निरंतर तेरे कीर्तन किये। न स्वयं सोये न पड़ोसियों को सोने दिया। कैसा अद्भुत प्रचार किया तेरे नाम का ? मेरी जाति के करोड़ों मनुष्यों ने तेरी भक्ति में शरीर सुखा डाले। भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक तपती गर्मी में,कॅपकॅपाती बर्फीली ठंड में पृथ्वी पर लेट-लेट कर तेरे धामों की तीर्थ यात्रायें कीं। और तूने पहले मेरी जाति को १२०० वर्ष तक विधर्मियों का गुलाम बनाया। और अंत मे मेरी जाति का नामों निशान ही पृथ्वी से मिटा दिया। तूने ऐसा क्यों किया? तूने विधर्मी विदेशी आततइयों का और आक्रान्ताओं का साथ दिया और अपने भक्तों की रक्षा नहीं की ? कहाँ गया तेरा वह प्रण कि तेरे भक्त का नाश कभी नहीं होता

परमेश्वर उस हिन्दू का आरोप सुनकर मंद-मंद मुस्कुराते रहे। फिर बोले, "पुत्र मैं अपने भक्तों की रक्षा उनके शत्रुओं से तो कर सकता हूं किन्तु यदि वह स्वयं ही अपने शत्रु बनकर अपना विनाश करने लगें तो मैं क्या करुं ? कृष्णवंशी यादवों को किसी ने नष्ट नहीं किया था। वह आपस में लड़कर स्वयं ही नष्ट हो गये थे। सुनोगे हिन्दुओं की रक्षा के कितने उपाय मैने किये ? कितने साधन उन्हें उपलब्ध कराये ?"

"सुनो ! मैंने तुम लोगों को पूरे संसार का अनुपम भू-भाग दिया। किसी धातु किसी सम्पदा का नाम तो लो जो उस देश की धरती के नीचे, पहाड़ों अथवा समुद्र में न मिलती हो। ऐसी उपजाऊ भूमि दी जिसमें सभी वनस्पतियाँ, वृक्ष, फल, ईंधन और श्रेष्ठ इमारती लकड़ी पैदा होती है। नदियों में और भूगर्भ में इतना जल दिया कि जिसको देखकर मनुष्य क्या देवता भी ईर्ष्या करें। इतना ही नहीं, मैने उसे सहज सुरक्षित करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। संसार का सब से ऊंचा और विशाल पर्वत उत्तर में और तीन ओर से समुद्र उसकी रक्षा करता है। बोलो इस से अधिक भौतिक सम्पदा मैं तुम्हें क्या देता ?"

भगवान कहते गये: "अब सुनो ज्ञान विज्ञान और नीति की बातें। मैने तुम्हें वेदों के रूप में अपनी कल्याणमयी वाणी दी और तुम्हें सावधान किया "पुत्रों ! यह मेरी कल्याणमयी वाणी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, भृत्य, स्त्रियों तथा अति शूद्रादि जनों के लिये भी है। इस से किसी को भी वंचित मत करना। सभी को इसका ज्ञान कराना।" किन्तु तुमने इसका

उल्टा किया। अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिये इसके अर्थों का अनर्थ किया। स्त्री, शूद्र एवम् अत्यजों को तो इससे पूर्णतया वंचित ही कर दिया। स्त्रियाँ इस ज्ञान के अभाव में मूढ़ हो गईं। स्त्रियाँ ही माता होती हैं। वह ही संतान की प्रथम गुरु होती हैं। जब वह मूढ़ हो गईं तो तुम्हारी भावी संतति भी पीढ़ी दर पीढ़ी मूढ़ होती गई। दूसरा कोई समाज है जो लगातार १२०० वर्षों तक गुलाम रहा हो? यह इसी मूढ़ता का फल था। इसमें मेरा क्या दोष है? इस ज्ञान विज्ञान के अभाव में आर्य अनार्य हो गये। स्वयं भारत में धर्म की निराली – निराली व्याख्यायें की गईं। धर्म के नाम पर अधर्म का, ज्ञान के नाम पर अज्ञान का बोल बाला हो गया। फिर बताओ तुम किस मापदंड के आधार पर मेरे भक्त रह गये?

"स्वभाववश मुझे तुम पर दया आई। मैंने मनु जैसे स्मृतिकार को भेजा। उसने तुम्हें राज्य व्यवस्था के नियम बताये। उसने तुम्हें बताया था कि जब सब सोते है तब दंड जागता है। इसलिये दुष्टों को दंड देना ही राजधर्म है। जब तक तुम्हारे शासक दुष्टों को निर्मूल करते रहे तुम सुरक्षित रहे। उसने तुम्हें यह भी सावधान किया था कि सभा में या ता प्रवेश ही न करो और यदि प्रवेश करो तो वहाँ किसी भी मूल्य पर सत्य द्वारा झूठ को उजागर करो क्योंकि यही सभासद का कर्तव्य तथा धर्म है। यदि वह ऐसा नहीं करता तो पापी है। क्या तुम ने इस पर आचरण किया ? तुमने तो मनु के उपदेशों को भी प्रदूषित करने से नहीं छोड़ा। स्वार्थपूर्ति के लिये अपनी ओर से उसमें सैकड़ों पापपूर्ण श्लोक जोड़ कर पूरी स्मृति को दूषित बना डाला। अपने ही समाज के एक बड़े वर्ग को पशुओं से भी बदतर जीवन जीने को बाध्य कर दिया। तुम्हारी अज्ञानावस्था को देखकर मैंने बाल्मीकि और व्यास जैसे कथाकार भेजे जो महापुरुषों की कथाओं द्वारा तुम्हें सन्मार्ग दिखा सकें। तुमने अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिये उनकी कला कृतियों में भी सहस्रों श्लोक मिला कर उन्हें भ्रष्ट कर डाला। देवदासियों के नाम पर अबोध बालिकायें वेश्यावृत्ति में उतार दी गईं। तीर्थस्थान जहाँ लोग तपस्या के लिये जाते थे, व्यभिचार के अड्डे बन गये। निरीह पशुओं की बलि दी जाने लगी। मंदिर बूचड़ खाने बन गये।

"मुझे तुम पर फिर दया आई। मैंने गौतम बुद्ध को भेजा। उन्होंने अहिंसा तथा कर्म–फल–चक्र की शिक्षा दी। भारतवासियों ने उस शिक्षा को भी तोड़ मरोड़ डाला। बुद्ध ने अहिंसा के अर्थ यह कब किये थे कि आततायियों और आक्रमणकारियों से भी युद्ध मत करो? किन्तु भारत के बौद्धों ने यही किया। सिंध के अरब आक्रमण के समय बौद्धों ने अहिंसा के नाम पर आक्रमणकारियों से सहयोग किया। गौतम बुद्ध की मूर्तियों से देश को पाट तो दिया, किन्तु उनके उपदेशों की अवहेलना की। उनके प्रेम और त्यागमय जीवन का अनुकरण नहीं किया। उनके कर्म–फल–चक्र की उपेक्षा की। फलस्वरूप उन्हीं आततायियों ने बुद्ध की मूर्तियों को तोड़ डाला। बड़ी संख्या में बौद्धों को इस्लाम धर्म बलात स्वीकार करना पड़ा। जापान, चीन इत्यादि देशों ने जिस बौद्ध धर्म के बल पर संगठन और शक्ति का संग्रह किया वह तुम्हारी गुलामी का कारण बना।"
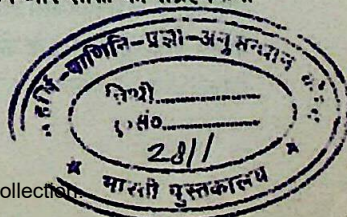
"तुमने ठीक कहा है। तुम ने मेरी करोड़ो रुपये की कल्पित मूर्तियाँ बना-बना कर करोड़ों रुपये उनके मंदिर, आभूषण और भोग पर खर्च कर डाले। क्या तुमने कभी सोचा कि यही तुम्हारे पतन और अन्त में नष्ट हो जाने का कारण है?

"तुम यह मंदिर और मूर्ति बनाते रहे। आतताई उन्हें ध्वस्त करते रहे। लूटते रहे। किन्तु मूर्तियां बना-बना कर स्थापित करने, मंदिर बनाने तथा वहाँ सोना, जवाहरात संचित करने का तुम्हारा मोह भंग नहीं हुआ। मोहम्मद बिन कासिम, अकेले मुल्तान के सूर्य मंदिर से १३५०० मन सोना लूट ले गया। महमूद गजनवी ने सोमनाथ मंदिर से इतना सोना और हीरे लूटे कि गज़नी के लोगों की आँखें फटी रह गईं। अलाउद्दीन खिलजी दक्खिन के मंदिरों से ६०,००० मन सोना लूट लाया। इन लुटेरों ने मंदिरों की इस सम्पत्ति का उपयोग सेना की भरती और फिर तुम्हारे समाज को नष्ट करने में किया। अब्दाली को लूट का सामान ढोने के लिए अपनी तोपें छोड़ देनी पड़ी जिससे सेना के हर चौपाये और दुपाये का उपयोग सोना, रत्न इत्यादि ढोने में किया जा सके। समकालीन मुस्लिम इतिहास कार लिखते हैं कि दिल्ली के आस पास किसी नागरिक के पास उसने एक गधा तक न छोड़ा।

"स्वतंत्र भारत में भी तुमने विशाल मंदिर तो बनाये किन्तु अपनी संस्कृति और समाज की रक्षा के लिये क्या कोई शिक्षा संस्थान भी खोला ?

"मैं पूछता हूँ एक सहस्र वर्षों तक तुम्हें यह क्यों नहीं सूझा कि उस द्रव्य से तुम सेना और हथियार इकट्ठे करते। संगठन के लिये गांव-गांव में अखाड़े तथा शस्त्र शिक्षा का प्रबन्ध करते। ऐसी पौंठशालायें खोलते जिनमें शस्त्र विद्या तथा युद्ध कौशल सीखे अर्जुन जैसे धनुर्धर, कर्ण जैसे दानी, भीम जैसे मल्ल, कृष्ण जैसे धर्म की स्थापना करने वाले, उसके मर्म के ज्ञाता, कौटिल्य जैसे कूटनीतिज्ञ सहस्रो की संख्या में निर्मित होते ?

"मुसलमानों और ईसाईयों ने तुम्हारे देश में अपनी संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिये सहस्रों मदरसे तथा स्कूल खोल डाले। वहाँ हिन्दू संस्कृति के मर्म पर चोट पहुँचाने की शिक्षा पा पाकर लाखों भारतीय बच्चे प्रतिवर्ष युवा बन कर देश भर में फैलते रहे। तुमने अपनी भावी पीढ़ी में इन दोनों संस्कृतियों से श्रेष्ठ हिन्दू संस्कृति की छाप जमाने के लिये क्या किया? क्या तुमने उसकी शिक्षा का भार विदेशियों, निरंकुश तथा अहिन्दू लोगों के हाथ में नहीं छोड़ दिया ? जब भारत गुलामी से स्वतंत्र हुआ तो वहाँ कुल ८८ मुस्लिम मदरसे थे और कुछ मिशनरी ईसाई स्कूल। ५० वर्ष से भी कम समय में भारत में ३०,००० मदरसे और असंख्य अंग्रेजी स्कूल खुल गये।

" कितना महत्वपूर्ण अंतर था तुम्हारे पूर्वजों द्वारा अर्जित ज्ञान में और तुम्हारे विधर्मी आक्रमणकारियों में। उनके धर्म का सारा भवन टिका था मेरे द्वारा निर्मित एक मनुष्य के ऊपर। वह समझते थे कि मेरी कृपा प्राप्त करने के लिये उनमें से किसी एक पैगम्बर अथवा धर्म गुरु पर अंध विश्वास होना ही पर्याप्त है। फिर उनके सभी दुष्कर्मों और पापों को मैं उनके पैगम्बरों की मध्यस्थता के कारण क्षमा कर दूँगा। और तुम्हें बताया गया था कि कर्म तो अच्छे

हों या बुरे भोगने ही पड़ेंगे। मेरे तुम्हारे बीच में कोई मध्यस्थ नहीं है। मैं भी अपने नियमों से बंधा हूं।

"मैं तो सत चित आनन्द हूँ। तुम मेरे गीत गाओ अथवा मुझे गाली दो, मंदिर बनाओ या तोड़ो उससे न मैं प्रसन्न होता हूँ न क्रुद्ध। यह दूसरी बात है कि मेरे गुण गान कर मेरे शाश्वत गुण तुम अपने अन्दर उत्पन्न करो। तुम्हें तो तुम्हारे कर्मों का फल ही प्राप्त होगा। तुम जड़ की पूजा करोगे तो जड़ता की ओंर, चैतन्य की पूजा करोगे तो चैतन्य की ओर बढ़ते जाओगे। क्या गीता में कृष्ण ने तुम्हें नहीं बताया था :

यान्ति देवव्रता .देवान्, पितृन्यान्ति पितृवृता : ।

भूतानि यान्ति भूतेज्या, यान्ति मद्याजिनों ऽ माम।। गीता ९:२५

जो देवताओं की पूजा करते है वह देवताओं को, जो पितरों की पूजा करते है वह पितरों को, जो भूतों और जड़ पदार्थों की पूजा करते है वह जड़ता को प्राप्त होते है। केवल वही मुझे प्राप्त होते है जो मेरी पूजा करते है।

ऐसा कंर्म फल सिद्धान्त तुम्हारे पास था किन्तु तुमने उसके विरुद्ध जड़ पदार्थों की पूजा, मृत पुरुषों की कब्रो, समाधियों और लक्ष्मी की पूजा की। फल स्वरूप, मृत्यु, जड़ता एवम् धन ही तुम्हारे पल्ले पड़ा।

तुम्हें स्पष्ट बताया गया था :

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते, पूज्यानाम च निरादर : ।

त्रीणि तत्र प्रविशन्ति, दुर्भिक्षम, मरणम, भयम।। (महाभारत)

जो समाज उनकी पूजा करता है जो पूजा के योग्य नहीं है और उनका निरादर करता है जो पूजा के योग्य हैं उस समाज को दुर्भिक्ष, मृत्यु और भय भोगना पड़ता है।

" मैने तुम्हें विद्याध्यन और स्वाध्याय के लिये आदेश दिया था। इसमें प्रमाद न करने को कहा था। "स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदित्व्यं।" स्वाध्याय और उससे प्राप्त ज्ञान के प्रचार प्रसार में प्रमाद मत करना। क्या तुमने अपने और विदेशी आक्रमणकारियों के धार्मिक विश्वासों और इतिहास का स्वाध्याय किया? जब स्वाध्याय ही नहीं किया तो उसका प्रचार प्रसार क्या करते ? उसका प्रतिकार कैसे करते ? ज्ञानार्जन के स्थान पर तुमने सरस्वती की पत्थर की मूर्ति बनाकर उसकी आराधना ारम्भ कर दी। शक्ति की उपासना की जगह उसकी भी पत्थर की कपोलकल्पित मूर्ति बनाकर पूजा करना ही ध्येय बना लिया। अपने शस्त्रास्त्र इन निर्जीव मूर्तियों को पकड़ा कर तुमने अपनी रक्षा का भार उन पर छोड़ दिया । जब महमूद गजनवी के खूनी लुटेरों का टिड्डी दल सोमनाथ की ओर बढ़ रहा था तुम्हारे मूर्ख अंध विश्वासी रक्षक मंदिर की दीवारों पर बैठकर उनका उपहास कर रहे थे कि पास आते ही सोमनाथ उन्हें भस्म कर देंगे। वह सब गाजर मूली की तरह काट दिये गये। सोमनाथ की प्रतिमा तोड़ कर गज़नी में मस्जिदों की सीढ़ियों पर और बाजार में डाल दी गई जिससे वह मुसलमानों द्वारा पद दलित और अपमानित होती रहे। सोमनाथ का मंदिर न जाने कितनी
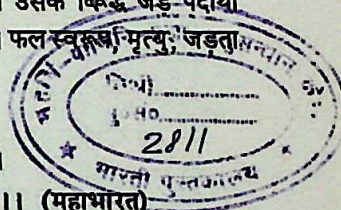
बार बना और टूटा। राजनीति में कभी कभी भूल हो जाती है। किंतु उसी भूल को बार बार करने वाले समाज को ज़ीने का अधिकार नहीं होता। तुमने तो गायत्री छंद में दिये गये एक ज्ञानमय मंत्र के अर्थों पर आचरण न कर उसकी भी मूर्ति बना डाली। पुत्र ! स्वर्ण की गउवें दूध नहीं देतीं । पत्थर के सिंह एक चूहा भी नहीं मार सकते। यह बात तुम्हारी समझ में क्यों नही आई ?

" तुम्हारा मंदिरों का मोह और पत्थर के देवी देवताओं पर विश्वास बना रहा। जितना कोलाहल तुम्हारे मंदिरों में होता था उतना तो हाट बाजार में भी नहीं होता। और कौन जाता था तुम्हारे इन मन्दिरों में ? क्या करते थे वह वहाँ ? कितनी देर ? वहाँ अधिकतर जाते थे निकट आती मृत्यु से भयभीत वृद्ध और वृद्धायें ? जो लोग आते थे वह भी वहाँ उतनी देर ही ठहरते थे जितना समय पुजारी को उनका प्रसाद मूर्ति पर चढ़ाने में लगता था। प्रसाद चढ़ा कर और शेष भाग लेकर उन्हें अपने व्यवसाय पर जाने की जल्दी रहती थी। तुम्हारे पुजारी भी अधिकतर ऐसे थे जिनका शास्त्र अध्ययन ना के बराबर था। जो ज्ञान उन्हें स्वयं नहीं था वह तुम्हें क्या बताते? कहीं कहीं थोड़ा भजन कीर्तन होता था जिसका भाव होता था ईश्वर भक्ति अथवा पौराणिक कथायें– कहानी मात्र सुनने का रस। प्रवचन यदि कहीं होता भी था तो केवल यह बताने के लिये कि संसार अनित्य है। सब माया है। छलावा है। जबकि सत्य यह है कि प्रवचन करने वालों और सुनने वालों के लिये वास्तव में संसार ही सब कुछ था। शेष सब झूठ था। वह अपनी जाति के लिये उस झूठे संसार का, उस माया का, जो उन्होंने उचित अनुचित का ध्यान किये बिना संचित किया था, एक पैसा भी समाज के लिये खर्च करने में संकोच करते थे। क्या वहाँ कभी भी इस पर प्रवचन होता था कि हिन्दू धर्म के मूल सिद्धांत क्या हैं? वह दूसरे मत मतान्तरों से क्यों श्रेष्ठ है। होता भी कैसे वहाँ प्रवचन करने वालों को ही इसका ज्ञान कहाँ था ?

" इसके विपरीत मस्जिदों में क्या होता था ? वयस्क पुरुषों का ५३ प्रतिशत समाज वहाँ दिन में पाँच बार एक दम शांति के साथ मेरा ध्यान करता था ? इनमें अधिकांश युवक और किशोर होते थे। उसके पश्चात वहाँ इस्लाम धर्म की विधिवत शिक्षा प्राप्त इमाम श्रोताओं को इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों का उपदेश करता था। उन्हें बताता था कि इस्लाम दूसरे धर्मों से श्रेष्ठ क्यों है। समाज में फैले इस्लाम विरोधी रीति रिवाजों की वहाँ कड़ी आलोचना होती थी। उनको मिटाने पर बल दिया जाता था। साधन जुटाये जाते थे। गरीब से गरीब मुसलमान अपने समाज के लाभ के लिये बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी करने को तत्पर रहता था। और तो और समाज का वातावरण बिगाड़ने वाले कानूनी मुकदमें भी वहाँ सामाजिक दबाव डाल कर सुलह कराये जाते थे। समाज की सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं से किस प्रकार जूझा जाय उस पर विचार होता था। सत्ता प्राप्त करना धर्म के प्रचार प्रसार के लिये आवश्यक है। इसलिये सत्ता पर किस प्रकार कब्जा किया जाय, उसके लिये ध्यानपूर्वक कुशल लोगों द्वारा नियोजित ढंग से अमल होता था। वहाँ पर स्थापित लाखों मकतबों में चार चार पाँच–पाँच

साल के बच्चों को कट्टर इस्लाम की शिक्षा दी जाती थी। कुफ़्र और काफ़िरों से घृणा करना सिखाया जाता था। समाज के लिये बलिदान होने की भावना भरी जाती थी।

"तुम्हारे समाज की मूर्खता और आपसी फूट के कारण मुस्लिम राज्य आया। उन्होने तुम्हारे शास्त्रों का तुम्हारे चरित्र का गहन अध्ययन किया। तुम्हारी पुस्तकों के फारसी अनुवाद कराये। तुम्हारी कमजोरियों से लाभ उठाया। तुम्हारी पाठशालायें और पुस्तकालय इसलिये ध्वस्त कर दिये कि कहीं तुम अपने बच्चों को अपने धर्म और इतिहास की शिक्षा दे कर उनकी शक्ति को खतरा न बन जाओ। तुम ने उनके धर्म और इतिहास का, उनके संगठन का, उनकी युद्ध और सैन्य प्रणाली का कोई अध्ययन नहीं किया। तुम एक दूसरे के साथ विश्वासघात करते रहे। वह एक एक कर तुम्हें परास्त करते रहे। मैंने तुम्हें जो संगठन सूत्र दिया था उस पर तुमने कितना आचरण किया ? करोड़ों लोग मुसलमान बनाये गये। यदि उन्होंने अपने धर्म में वापिस आने की गुहार भी की तो वह अस्वीकार कर दी गई।

"तुम्हारी निरन्तर पराजय से उत्पन्न हताश दशा को देखकर मैंने प्रताप, दुर्गादास शिवाजी, गुरु गोविंद सिंह, जैसे योद्धा रास बिहारी बोस, जितेन्द्रनाथ, शचीन्द्र सान्याल, भगत सिंह, पिंगले, सावरकर, मदनलाल धींगरा जैसे सैंकड़ों क्रान्तिकारी युवक भेजे। एक बार को लगा कि तुम भारत में फिर से धर्म पर आधारित,संसार के लिए आदर्श राज्य स्थापित करोगे। किन्तु तुम आपस में मिलकर न बैठ सके। यह भूल गये कि बसुन्धरा वीर भोग्या है कायर भोग्या नहीं। तुमने अहिंसा का मर्म न समझ कर अहिंसा के नाम पर फिर कायरता को वरण किया। समाज को शौर्य और प्रतिघात की क्रान्तिकारी शिक्षा नहीं दी।

"फिर मुसलमान निर्बल हो गये तो अंग्रेजों ने उन्हें परास्त कर तुम दोनों पर राज्य किया। उन्होंने भी तुम्हारी पुस्तकों का गहन अध्ययन किया। जिन धर्म पुस्तकों को तुमने अंधेरी कोठरियों में बाँध बाँध कर रख दिया था उनको पैसे दे दे कर उन्होंने खरीदा। उनका अंग्रेजी में अनुवाद करवाया। उनमें दिये गये ज्ञान से लाभ उठाया। तुम्हारी कमजोरियों को समझा और तुम्हारे कमजोर मर्म स्थलों पर चोट की। उन्होने भी करोड़ो लोगों को ईसाई बनाया। तुम्हारे सहस्रों वर्षों से प्रताणित धर्म वन्धु मुसलमान ईसाई बन कर तुम्हारी जड़ खोदने लगे। १२०० वर्ष पहले भी इन तथाकथित धर्मों की वास्तविकता को समझे बिना ही स्वयं तुम्हारे शासकों ने भारत में मस्जिदें तथा गिरजाघर सरकारी धन से निर्माण कराये थे। मुस्लिम देशों से व्यापारिक लाभ उठाने के लिये स्वयं इस्लाम धर्म स्वीकार किया तथा अपने नाविकों को भी कराया था। विदेशी नाविकों को हिन्दू स्त्रियाँ दे देकर भारत में बसाया था। उन्हीं की संतानों मोपलों ने आगे चलकर तुम पर कहर ढाये। बल पूर्वक और छल द्वारा धर्मान्तरण किये। किन्तु १२०० वर्षों में क्या तुम्हारे विद्वानों ने कभी भी इन धर्मों का गहन अध्ययन कर उनके इरादों को समझा ? तुम्हारी संख्या कम होती गई। उनकी बढ़ती गई। तुम्हारा धर्म हो गया जैसे भी हो पैसा तथा क्षणिक सत्ता प्राप्त करना और सत्ता में बने रहना। फलस्वरूप पैसा तुमने पर्याप्त मात्रा में कमाया भी। सत्ता में भी तुम बने रहे किन्तु किसी संस्कृति को केवल पैसा

नहीं बचा सकता। सत्ता भी नहीं बचा सकती। यह तो साधन मात्र हैं। उसको बचाने के लिये ज्ञान, त्याग, लगन, तप एवम् बलिदान की आवश्यकता होती है। इन गुणों का तुम्हारी जाति में नितान्त अभाव हो गया। त्याग तो तुम क्या करते, तुम लोगों ने अपनी उन सार्वजनिक संस्थाओं को भी लूटलूट कर खोखला कर दिया जिनको जाति के भक्तों ने अपनी पसीने की कमाई का दान दे देकर खड़ा किया था। ऐसे लोभी स्वार्थी अज्ञानी लोग तपस्या और बलिदान नहीं किया करते।"

नत मस्तक हो और हाथ जोड़कर वह हिन्दू भगवान से बोला, "प्रभो समाज में अच्छे बुरे लोग सर्वत्र ही होते है। भूल मनुष्य से ही होती है। आपने सब सत्य ही कहा है किन्तु फिर भी मेरे समाज में दानी और परोपकारी मनुष्यों की, तपस्वी साधकों की कमी नहीं थी। दानी महानुभावों ने सहस्रों आश्रम खोले। एक एक आश्रम में सैकड़ों साधक और परिव्राजक भोजन पाते थे। प्रवचन और पाठ होते थे।" भगवान उसे बीच में ही रोक कर बोले, "हाँ मैने तुम्हारे वह आश्रम देखे है वहाँ जो कुछ होता है वह मुझ से छिपा नहीं है। वह आश्रम कहाँ है ? विलास की क्या कमी है वहाँ ? जो सैकड़ो लोग नित्य प्रति मुफ्त भोजन पाते है उनमें गिनती के दोचार भी तो साधक नहीं है। अधिकांश निठल्ले लोग है जिन्हे बिना परिश्रम भोजन पाने की आदत पड़ गई है। वह समाज के परजीवी बन गये है। शेष जो श्रद्धावान लोग वहाँ आते है उनमें से कुछ तो वर्ष भर सांसारिक कार्यों में लिप्त रहकर वहाँ पर थोड़ी शाँति की खोज में आते है। उनके लिये यह एक छुट्टी मनाने के अतिरिक्त कुछ भी नही। अधिकांश आश्रमों में उनकी जमीन जायदाद के मुकदमें चल रहे है। अध्यात्म, स्वाध्याय और समाज सेवा से यह आश्रम और उनके मठाधीश कोसों दूर है। तुम्हारे साधु संतो की इस बुरी दशा को देखकर मैंने तुम्हें एक अंतिम अवसर और दिया। अपने तेजस्वी, तपस्वी पुत्र दयानन्द को भेजा। उसने वेदों का उद्धार किया। उन सभी तत्वों का अध्ययन किया जो तुम्हारे समाज को पतन की ओर ले जा रहे थे। उनके विरुद्ध उसने युद्ध की घोषणा कर दी। किन्तु उसे तुम्हारी ही जाति के एक मनुष्य द्वारा विष दिया गया। उसके निधन के ५० वर्ष पश्चात ही उसका संगठन स्वार्थी लोगों द्वारा विघटित होने लगा। सत्ता और धन के लोभी बलशाली हो गये। उसके बताये हुए अपने मुख्य ध्येय को भूलकर वह दूषित राजनीति में उन्ही तत्वों की कृपा जोहने लगे जिन के विरुद्ध उसने तुम्हें सावधान किया था। अंग्रेजों के आने से पहले भारत में जनगणना की कोई पद्धति न थी,१८६१ में पहली जनगणना हुई उन जनगणना में हिन्दू भारत में ७५.१ प्रतिशत थे। १९४१ आते आते अर्थात ८० वर्ष में भारत में हिन्दू मात्र ६९.५ प्रतिशत रह गये। इसी समय में मुसलमान १९.९७ प्रतिशत से बढ़कर २४.२८ प्रतिशत हो गये। इसी प्रकार की बढ़ोत्तरी ईसाइयों में भी हुई।

"फिर १९४७ में भारत का बँटवारा हुआ, हिन्दू भारत एवम् मुस्लिम भारत में। जिन नदियों के तट पर बैठ कर तुम्हारे ऋषियों ने वेदों की ऋचायें लिखीं थी और जिस तक्षशिला में तुम्हारे महान विद्वानों का निर्माण हुआ था, पाणिनी की जन्मस्थली,वह सब मुस्लिम प्रांत

बन गये। ९७ प्रतिशत मुसलमानों ने पाकिस्तान के पक्ष में मत देकर सिद्ध कर दिया कि वह तुम्हारे साथ सह–नागरिक बनकर नहीं रह सकते। तुम्हारी जाति जिनको शूद्र कहती थी, उन्हीं शूद्रों में से मेरे एक मनस्वी और तेजस्वी पुत्र अम्बेडकर ने तुम्हारे अदूरदर्शी और भ्रमित नेताओं को बार बार चेताया कि मजहब के नाम पर ९७ प्रतिशत मुसलमानों द्वारा पाकिस्तान की माँग उठाने के पश्चात मुसलमानों का हिन्दू भारत में बने रहने का कोई औचित्य नहीं है। यदि वह भारत में रहे तो विभाजन से पूर्व की समस्यायें ज्यों की त्यों बनी रहेंगी। किन्तु तुम्हारे पद–लोलुप, दंभी और अदूरदर्शी नेताओं ने उसकी एक न मानी। उन्होंने पाकिस्तान गये हुये मुसलमानों से लौट आने की अनुनय विनय की। फलस्वरूप हिन्दू भारत में वही मुस्लिम समस्यायें फिर खड़ी हो गईं जो पहले थीं। अपने ही बनाये स्वप्नों में खोये तुम्हारे नेता टूटे हुये कांच के टुकड़ों को गोंद लगा लगा कर जोड़ने के प्रयास करते रहे। उन प्रयासों की असफलता का दोष वह कभी कांच की कठोरता पर और कभी गोंद में चिपक की असफलता पर लगा कर रुदन करते रहे। '१२०० वर्ष के अनुभव से वह कांच के कभी न जुड़ने वाले स्वभाव को क्यों नहीं समझ पाये ? ऐसे मूर्ख समाज को तो नष्ट होना ही था।

"हिन्दू भारत में हिन्दू का प्रतिशत १९५१ में था ८४.७८ प्रतिशत। १९७१ में अर्थात केवल बीस वर्ष बाद वह रह गया ८२.७२ प्रतिशत।"

"यह सीधा साधा गणित तुम्हारे किसी नेता की समझ में क्यों नही आया कि बूंद बूंद घटने पर समुद्र भी सूख सकता है। तुम अपने ही देश में एक प्रतिशत प्रति दस वर्ष की गति से कम होते जा रहे थे। और मुसलमान ईसाई लगभग इसी गति से बढ़ते जा रहे थे। संख्या की इस दौड़ में तुम उनसे दो प्रतिशत प्रति दस वर्ष पिछड़ते जा रहे थे। इसी प्रकार ईसाईयों से भी। किन्तु तुम्हारी जाति का यह संख्या ह्रास तो केवल जन्म दर के कारण था। विधर्मी पास के विदेशों से चोरी छिपे तुम्हारी सीमाओं में घुसे चले आ रहे थे। नागालैंड में मुस्लिम १९६१–७१ के बीच २३२ प्रतिशत और १९७१–८१ के बीच २९८ प्रतिशत बढ़े। जब कि हिन्दू लगभग ७५ प्रतिशत बढ़े। सिक्किम में मुस्लिम १९७१–८१ में ८६७ प्रतिशत अरुणाचल में ५०२ मिजोरम में १९६१–७१ में ८०५ प्रतिशत बढ़े। तुम्हारे शासक और समाज इस चारों ओर से घिरती चली आ रही टिड्डी दल जैसी आपत्ति से कैसे आँखे मूंदे बैठे रहे?"

वह हिन्दू भगवान की इन कटु बातों से तिलमिला उठा। उसने हाथ उठा कर कहा : "प्रभो ! क्षमा करें। क्या "सर्व धर्म सम भाव" और 'सत्यमेव जयते' जैसे सिद्धान्तों की संसार में घोषणा करने और उन पर आचरण करने वाले हिन्दू समाज को नष्ट हो जाना चाहिये था ? कौन सा दूसरा समाज है जो इन सिद्धान्तों पर आचरण तो दूर इनको मान्यता भी देता हो।"

भगवान अपने उस अबोध बालक पर करुणामयी दृष्टि डाल कर बोले : "वत्स ! तुम्हारे समाज जैसा भ्रमित समाज संसार में दूसरा न कभी रहा न कभी रहेगा। तुम्हारे उपरोक्त दोनों ही सिद्धान्त तुम्हारी मूर्खता के परिचायक है। धर्मो में समानता कम है विरोध अधिक।

क्या तुम्हारे अतिरिक्त कोई भी धर्म दूसरे धर्म को आदर अथवा सम्मान योग्य घोषित करता है। कर भी नहीं सकता। अन्यथा उसके अस्तित्व की आवश्यकता ही क्या ? ईसाई, इस्लाम आदि मध्य एशिया में उत्पन्न मज़हब हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों के नितांत विपरीत सिद्धांत पर बल देते है। वह जिन धर्मों को कुफ़्र और मूर्खता की उपज समझते है उनकों आदर कैसा ? समान आदर तो असम्भव है।

"अब सुनो 'सत्यमेव जयते' का रहस्य। तुमने इसका अर्थ समझा कि सत्य पक्ष की सदैव विजय होती है, असत्य पक्ष की नहीं। इस कारण अपने पक्ष को सत्य मान कर तुम सदैव आश्वस्त होते रहे कि विजय तुम्हारी ही होगी। किंतु इस उपनिषद वाक्य का अर्थ यह नहीं है कि सत्य पक्ष की सदैव विजय होती है। इसका अर्थ यह है कि सत्य सिद्धांत की सदैव विजय होती है,असत्य सिद्धांत की नहीं। सत्य सिद्धान्त यह है कि बलवान की विजय होती है निर्बल की नहीं। चातुर्य की विजय होती है मूर्खता की नहीं। शौर्य की विजय होती है कायरता की नहीं। संगठित समाज की विजय होती है असंगठित की नहीं। अनुशासित शासन की विजय होती है अनुशासनहीन की नहीं। और जो विजयी होता है उसी का पक्ष सत्य मान लिया जाता है। इस कसौटी पर अपनी असफलताओं को परखोगे तो तुम्हें इस सिद्धान्त का वास्तविक अर्थ समझ में आ जायगा।क्या तुमने कभी सोचा कि यदि सत्य पक्ष की ही सदैव विजय होती तो तुम यवनों और ईसाइयों से निरंतर क्यों हारते रहे ? क्या इससे यह सिद्ध हो गया कि तुम्हारा पक्ष झूठा था और उनका सत्य ? नहीं पुत्र नहीं ! इस उपनिषद–वाक्य का अर्थ यह नहीं है कि 'सत्य पक्ष की सदैव विजय होती है असत्य पक्ष की कभी नहीं।' इसका अर्थ यह है कि सत्य सिद्धात की सदैव विजय होती है असत्य सिद्धान्त की नहीं।"

"मैंने कहा था कि जो स्वयं अपनी रक्षा न कर संकें उनकी रक्षा मैं नही कर सकता। दुर्बल का मर जाना ही कल्याणकारी होता है, 'दैवो दुर्बल घातकः' दैव भी दुर्बल को ही मारता है" ऐसा मेरा मत है । यदि तुम्हें अपने समाज को जीवित रखने की आकांक्षा होती तो तुमने उस के निरंतर ह्रास रोकने का कोई उपाय तत्काल सोचा और किया होता। तुमने सांपों, चीतों, बाघों तथा गैडों इत्यादि पशुओं की सुरक्षा के तो कारगर उपाय किये जिससे उनकी प्रजाति लुप्त न हो जाय कितु अपने समाज, संस्कृति तथा धर्म को लुप्त होते हुये देख कर उसकी सुरक्षा का क्या कोई उपाय किया ? तुम और तुम्हारे द्वारा चुने हुये सत्ता प्राप्त शासक दशाब्दियों तक इस ह्रास को मूक बने देखते रहे। दूसरी ओर मुसलमानों व ईसाइयों ने वह सभी सम्भव उपाय किये जिनसे इस दौड़ में उनकी तुम्हें पछाड़ने की गति तीव्र होती गई। इस आत्मघाती लापरवाही का जिम्मेदार तुम्हारा समाज स्वयं था।

"तुम्हारे समाज ने बार बार उन्हीं लोगों को सत्ता सौंपी जिन्हें तुम्हारे हितों की कोई चिन्ता नहीं थी। जो कहने को हिन्दू थे किन्तु विजातिय संस्कृति एवम् धर्मों के प्रशंसक थे। उन्हें तो हिन्दू संस्कृति एवम् हिन्दू ज्ञान छू भी नहीं गया था। कैसी अद्भुत बात है कि

८५ प्रतिशृत जनसंख्या के बल पर चुने हुये प्रतिनिधि उसी समाज के साथ विश्वासघात करने की हिम्मत करें। ऐसा व्यवहार केवल एक मृत प्रायः समाज के साथ ही किया जा सकता है।

"तुम्हारे तथा कथित विद्वान भी धन और सम्मान की लालसा से इतिहास को तोड़ने मरोड़ने लगे। उन्हें अपनी जाति में ही सब दोष दिखाई देते थे। विजातिय संस्कृति एवम् धर्म की झूठी प्रशंसा ही मानों उनका कर्तव्य बन गया था। उनकी खोटी हिन्दू–घातक गतिविधियों को उजागर करने का साहस तुम में से किसी में न था। हिन्दू बाहुल्य के कारण धर्म के नाम पर बने तुम्हारे देश में मुसलमान समस्यायें पैदा क़रते रहे। पड़ौसी देश समस्यायें उत्पन्न करते रहे। न तुम्हारे नेताओं में और न तुम्हारे बुद्धिजीवियों में यह कहने का साहस हुआ कि यह समस्यायें उनका इस्लामी दर्शन उत्पन्न कर रहा है। वह उन समस्याओं को सदैव राजनीतिक कह कर अपने को धोखा देते रहे और समाज को भी भ्रमित करतें रहे। क्या उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि इस्लाम का एक मात्र ध्येय विश्व पर शरीयः शासन और इस्लाम की स्थापना है। जब तक यह ध्येय प्राप्त नहीं हो जाते है इस्लाम चुप नहीं बैठ सकता।"जिस समाज के विद्वतजन भ्रष्ट हो जाते हैं वह समाज नष्ट हो जाता है। क्योंकि शिक्षा द्वारा भावी पीढ़ी की मनोवृत्ति बनाने वाले वह ही है। जिस जाति को अपने हित चिंतकों और अहित चिंतको की पहचान न हो, जिसे अपने नितप्रति क्षीण होते अस्तित्व की चिंता ही न हो वह कितने दिन जीवित रह सकता है ?

"तुम में पूज्य अपूज्य का भेद न रहा, मित्र और शत्रु का भेद न रहा, धर्म अधर्म का भेद न रहा। ज्ञान अज्ञान का भेद न रहा। शिक्षा कुशिक्षा का भेद न रहा। क्या अब तुम्हारी समझ में आया कि अपनी बर्बादी के जिम्मेदार तुम स्वयं हो। मैंने तुम्हे बचाने के सहस्त्रों उपाय किये। बताओं वत्स ! मैं और क्या करता ? इसमें दोष तुम्हारी जाति का है या मेरा ?"

भारत के संवेदनशील क्षेत्रों में मुसलमानों की जनसंख्या का बढ़ता प्रतिशत

	मुस्लिम संख्या के विस्तार का प्रतिशत		हिन्दू संख्या के विस्तार का प्रतिशत	
	१९६१–७१	१९७१–८१	१९६१–७१	१९७१–८१
नागालेंड	२३२.८८	२९८.०४	७०.२३	८८.४८
पंजाब	२८.५२	४६.९०	८.१३	२१.९०
राजस्थान	३५.२७	४०.१०	२७.३	३२.५१
सिक्किम	पता नहीं	८६७.४६	पता नहीं	७९.६४
चण्डीगढ़	१५३.३८	१४५.०३	१०९.२६	८४.३४
दिल्ली	६९.२	८३.२	८२.५	५२.५
दादरा नगर हवेली	६५.१८	१६१.१	२५.६३	३९.३९
गोआ, दमन, दीव	१२०.८९	५०.२६	४३.२	३०.१०
मिजोरम	८०४.८	१७.१०	५४.०८	६६.०२

अंतिम हिन्दू (मूल लेख बंगला में)

श्री शिव प्रसाद राय
अंग्रेजी अनुवादक, ए.घोष
हिंदी अनुवादक- पुरुषोत्तम

संकट का पूर्वाभास

जब मैं छोटा बच्चा था, मैने एक पुस्तक पढ़ी थी। पुस्तक का नाम था 'जो समझ में न आ सकें। उसमें ऐसी घटनाओं का ज़िक्र था जो आदमी के 'सामान्य ज्ञान' से सिद्ध न होती हों। मैं अब बालक नहीं रहा, किन्तु अपने चारों ओर होती हुई घटनाओं को देखकर मुझे उस पुस्तक की याद आती है। ऐसा लगता है कि हमारे सारे समाज की विचारधारा में मूलभूत परिवर्तन आ गया है। हम अपने स्वपनों की दुनिया में रह रहे हैं। एक ऐसी दुनिया जिसका वास्तविकता से कोई सरोकार नहीं है। मुझे ऐसा लगता है कि यदि तथ्यों की ठोस बुनियाद पर अपने पैर ज़माने में ज़रा भी असावधानी की गई तो हम निश्चय ही सर्वनाश को प्राप्त हो जायेंगे। देश की सम्पूर्ण आर्थिक दुर्व्यवस्था और उससे होने वाली चरित्रहीनता की पराकाष्ठा का देश में प्रसार देश के बँटवारे के सिर मढ़ा जाता है। स्पष्टतया हिन्दुस्तान का बँटवारा हिन्दू नेताओं की अत्यधिक मूर्खता के कारण हुआ। सत्तानवे प्रतिशत मुसलमानों ने निश्चयपूर्वक यह कहा था कि 'हिन्दू और मुस्लिम दो भिन्न-भिन्न राष्ट्र हैं। मुसलमानों के लिये हिन्दूओं के साथ रहकर अपने धर्म और संस्कृति का पालन करना असंभव है। इसलिये मुसलमानों को अलग देश चाहिये जिसका नाम "पाकिस्तान" होगा अर्थात् पाक लोगों की भूमि।

जब पूरा मुस्लिम नेतृत्व हिन्दुस्तान के दो टुकड़े करने के लिये योजना बनाने में निरन्तर प्रयत्नशील था उस समय हमारे हिन्दू नेता क्या कर रहे थे ? हिन्दू नेता हिन्दुओं को यह समझाते दौड़ रहे थे कि 'हिन्दू और मुसलमानों में कोई भेद नही है। दोनों ही भारतीय राष्ट्र के अंग हैं। मुहम्मद अली जिन्नाह और मुस्लिम लीग जिस पाकिस्तान की माँग करते हैं वह बेबुनियाद है।'

महात्मा गांधी ने कहा था "हिन्दुस्तान का बँटवारा मेरी लाश पर ही हो सकता है।" पंडित नेहरु ने कहा था "पाकिस्तान एक वाहियात सपना है। हम तो ऐसा सपने में भी नहीं सोच सकते।" राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी मोटी पुस्तक 'इन्डिया डिवाइडेड' में लिखा था "पाकिस्तान असम्भव है" इन सबकी मान्यता थी कि अधिकतर मुसलमान देशभक्त थे और वह सब काँग्रेस पार्टी में थे। थोड़े से साम्प्रदायिक और अदूरदर्शी लोग हैं जो पाकिस्तान की

बात करते है और ख़तरे की अफ़वाहें फैलाते हैं। यह कोरा झूठ करोडों हिन्दुओं के कानों में मंत्रवत् इन अदूरदर्शी नेताओं के लाखों अनुयाइयों द्वारा फूँका जाता रहा। किन्तु वास्तव में हुआ क्या ? पाकिस्तान बना, अनगिनत हिन्दू मारे गये, हिन्दुओं के खून और आँसुओं के दरिया बहाए गये। स्त्रियों के सतीत्व लूटे गये। "हिन्दू और मुसलमान दो अलग–अलग कौमें हैं" इस तथ्य को सबको मानना पड़ा और अन्त में हिन्दुस्तान के टुकडे हो गए। अब इन राष्ट्रीय नेताओं को हम किस नाम से पुकारेंगे। हम उनको कपटी कहें या ढोंगी, या झूठे, या अदूरदर्शी, या जड़ बुद्धि या लोभी। उनके कार्यकलापों को देखते हुए यह सभी विशेषण उन पर ठीक बैठते हैं। किन्तु नहीं, मैं उन्हें इन नामों से नहीं पुकारुंगा। वह अब हमारे बीच में नहीं हैं। मेरे मन में उनके लिये अब भी कुछ आदर है। दैविक और भौतिक प्रेरणा से ही शायद उन्होंने कुछ ऐसा कहा होगा। किन्तु यह तो मानना ही पड़ेगा कि वह सामान्य व्यवहार बुद्धि से हीन थे। अन्यथा उनके कार्यकलापों को किसी भी प्रकार तर्क–संगत नहीं कहा जा सकता।

फाँसी पर लटके हिन्दू, सीने पर गोलियां खाईं हिन्दू ने और हुआ क्या ?

स्वतंत्रता के युद्ध में दैवी प्रेरणा वश हिन्दुओं ने अपने जीवन की बलि चढ़ाई जबकि मुसलमानों ने मुस्लिम राज्य की स्थापना की क्योंकि वहाँ मुसलमान बहुसंख्या में थे। फाँसी पर लटकने वालों की संख्या पूर्वी बंगाल में ही सर्वाधिक थी। उन शहीदों की नामावली में एक भी मुस्लिम नाम नहीं है जिसने इस देश के निर्माण अथवा स्वतंत्रता के लिये जीवन दिया हो। यह केवल पूर्वी – बंगला देश के लिये नहीं, बल्कि पूरे बंगाल के लिये भी सत्य था। मुसलमानों को उनके मन की मुराद पाकिस्तान और बंगला देश के रूप में प्राप्त हुई जिसके लिये उन्होने अंग्रेजों के साथ मिलकर हिन्दुस्तान के साथ विश्वास–घात किया था। और अब सोचिये तो सही ! पूर्वी बंगाल का हिन्दू फाँसी पर लटका, सीने पर गोलियां हिन्दू ने खाई, और उसका इनाम उसको क्या मिला ? अपनी मातृभूमि को छोड़कर शरणार्थी बन भारत को भागना पड़ा।

श्यामाप्रसाद मुखर्जी को छोड़कर एक भी हिन्दू नेता ऐसा नहीं था जिसमें थोड़ी सी भी आत्मसम्मान की भावना रही हो और जिसको इन घटनाओं ने आन्दोलित किया हो। और इन नेताओं ने श्यामाप्रसाद मुखर्जी को प्रतिक्रियावादी और साम्प्रदायिक जैसे नामों से सम्बोधित किया। देश के बँटवारे के समय जैसी परिस्थियां फिर पैदा हो रही हैं। ऐसा लगता है कि दूसरा बँटवारा फिर होगा। भारत के अधिकतर मुसलमान, कुछ लोगों को छोड़कर, इस ध्येय को मन में लेकर चल रहे हैं और उनकी इस योजना में सहयोग और शक्ति मिल रही है विदेशी धन से। वह लोग जो इन शरारतपूर्ण कार्यवाहियों को सही रूप में देखते हैं उनको साम्प्रदायिक कहा जाता है। दैवी प्रेरणा के वशीभूत हमारे हिन्दू नेता जो आधा भारत तो पहले ही गँवा चुके हैं अभी भी 'जड़ बुद्धि' बने हुये हैं।

हिन्दुस्तान का बँटवारा दो राज्यों के सिद्धान्तों पर हुआ था। किन्तु इन हिन्दू राजनीतिक नेताओं के सिर पर अभी भी मिश्रित संस्कृति और एक राष्ट्र का भूत सवार है। पाकिस्तान में हिन्दुओं का सफाया कर दिया गया, बंगला देश में यह प्रक्रिया जारी है। किन्तु हमारे हिन्दू नेता जनसंख्या की अदला बदली जैसे व्यवहारिक सिद्धान्त को आज भी मानने को तैयार नहीं हैं। इस प्रकार वही मुसलमान जिन्होंने पाकिस्तान यह कह कर बनवाया था कि हिन्दुओं के बीच उनका इस्लाम सुरक्षित नहीं है सर्वरूपेण भारत में ही रह गये, उन्होंने कुछ नहीं खोया। पाकिस्तान और बंगला देश तो उन की शुद्ध जागीरें बन गईं। उनमें हिन्दू को बोलने का भी अधिकार नहीं रहा। और यह विभाजित भारत फिर भी सम्मिलित खातें में है। यहाँ से जितना लूट सको लूटो। हिन्दुस्तानी मुसलमानों का कुछ इसी प्रकार का दृष्टिकोण है।

जब हिन्दुस्तान का बंटवारा हुआ तो पाकिस्तान को इस्लामी राज्य घोषित किया गया। किन्तु भारत हिन्दू राष्ट्र नहीं बना। यह बात प्रायः सभी जानते हैं कि हिन्दू राष्ट्र में किसी भी दूसरे धर्म पर संकट नही आया। नेपाल का ही उदाहरण ले लें जो कि हिन्दू राज्य है। उस देश को छोड़ कर एक भी मुसलमान को भागना नहीं पड़ा है।

किन्तु पाकिस्तान और बंगला देश में हिन्दू 'जिम्मी' और 'काफिर' कहे जाते हैं। बलि के बकरे की तरह वह लाचार हैं। उन्हें चाहे जब सताओं और जब चाहे ठोकर मार कर उनको उनके घरों से बाहर कर दो। भारत में रहने वाले एक भी मुसलमान को इन लाचार लोगों पर होने वाले जुल्म व सितम से शर्म महसूस नहीं होती। यहाँ तक कि वह मौखिक रूप से भी इसका विरोध करने का कष्ट नहीं उठाते। अभी कुछ दिन हुए २०००० चकमा हिन्दुओं को चटगाँव से खदेड़ा गया। जाहिर तौर पर अब बंगला देश उनकी वापसी पर सहमति का प्रचार कर रहा है। किन्तु लौटने पर उनके साथ जैसा व्यवहार किया जायेगा उसके डर से वह वापस जाना नही चाहते।

पाकिस्तान हितैषी ९७ प्रतिशत मुसलमान भारत में ही रह गए। उनके धर्म–संस्कृति पर कोई आँच नही आई। मुजीब के कत्ल होने पर उन्होंने खुशियाँ मनाई, और जब भुट्टो को फांसी दी गयी तो उन्होंने हिन्दुस्तान के सिनेमा हाल और बसें जलाई। अगर पाकिस्तान की टीम क्रिकेट या हाकी में जीत जाये तो अपने रेडियों को फूल माला पहनाते हैं। कलकत्ते के मुस्लिम बाहुल्य राजा बाजार और पार्क सरकस इलाकों में जलूस निकाल कर जश्न मनाते है। अल्लाह–ओ–अकबर के नारे लगाते हैं। इन मुसलमानों के आचरण से यह एकदम स्पष्ट दिखाई देता है कि इन लोगों का प्रेम व निष्ठा इस देश में न होकर कही और ही है। लखनऊ के मुसलमान ईरान और ईराक के पक्षधर हैं। उनके घरों में खुमैनी या सद्दाम हुसैन की तस्वीरें टँगी हैं। यदि कोई यह पूछ बैठे कि भारत के भक्त मुस्लिम कौन से हैं तो तुरन्त हिन्दू ही इकटठा होकर कहने लगेंगे कि इस प्रकार के प्रश्न करना घोर साम्प्रदायिकता है। वह ऐसा दोषारोपण क्यों करते हैं ? केवल इसलिए कि उनमें दैवी प्रेरणा तो भले ही हो किन्तु सामान्य

बुद्धि किंचित भी नहीं है।

जनतंत्र, समाजवाद, धर्म निरपेक्षता

लगभग सारी ही राजनीतिक पार्टियाँ इन तीन बिन्दुओं पर एक मत है – समाजवाद जनतंत्र और धर्म निरपेक्षता। यह तींनों ही लक्ष्य इस तथ्य पर आधारित हैं कि इस देश में हिन्दुओं की जनसंख्या अधिक है। जहाँ जहाँ भी इस देश में या संसार के अन्य देशों में गैर–मुस्लिम अल्पसंख्यक हो गया है वहाँ वहाँ यह उद्देश्य समाप्त हो गए हैं।

पाकिस्तान और बंगला देश में इन उद्देश्यों की अब कोई बात नहीं करता। काश्मीर में जहाँ मुस्लिम बाहुल्य है, सब प्रकार के साधन जुटाए जाने के बावजूद जैसे ५० पैसे किलो चावल, एम.ए. तक निःशुल्क शिक्षा इत्यादि –इत्यादि समाजवाद लाने में कोई भी सफलता नहीं मिली है, चाहे वह समाजवाद मार्क्स का हो या गाँधी का हो या इन्दिरा जी का हो। काश्मीर विधान सभा ने उन मुसलमानों को जो ३५ वर्षो से भारत छोड़कर पाकिस्तान में रह रहे हैं काश्मीर लौटने पर उनकी सम्पत्ति वापस करने का बिल पास किया है। किन्तु बंगला देश में हिन्दुओं की सम्पत्ति शत्रु सम्पत्ति मानी जाती है। इन्दिरा गाँधी का जादू देश में और कहीं भले ही चलता हो वह काश्मीर में नाकारा हो जाता है। किसी भी राजनीतिक पार्टी के नेता क्यों न हों, काश्मीर के मामलों में उनकी बोलती बन्द हो जाती है। शेख अब्दुल्ला जैसा आदमी जो देश द्रोह के अपराध में वर्षो जेल में बन्द रहा हो, जिसके हाथ श्यामाप्रसाद के खून से रंगे बताए जाते हों, वह काश्मीर के मुख्यमंत्री बनाए गए। और वह इसलिए बनाए गये कि वहाँ हिन्दू अल्पसंख्यक थे। अभी पिछले साल ही लगभग २०० मन्दिर काश्मीर में नष्ट किए गए और गिराए गए। वहाँ गीता जैसी धार्मिक और सत्यार्थ प्रकाश जैसी सांस्कृतिक पुस्तकें एक प्रकार से प्रतिबन्धित हैं।

भारत के अधिकांश हिन्दू नेताओं को इन बातों की पूरी जानकारी है किन्तु वह सब तो दैवी प्रेरणा और ब्रम्हज्ञान से इतने ओतप्रोत हैं कि एक सामान्य बुद्धि वाले मनुष्य की तरह वह इन सबका विरोध भी व्यक्त नहीं करते।

हिन्दू जनसंख्या का ह्रास

"संयुक्त राष्ट्र की जनगणना सांख्यिकी के अनुसार भारतीय मुसलमानों की अनियंत्रित जन्मदर और बाहर के देशों से बड़ी संख्या में घुसपैंठ के कारण सन् २००० ई. से पहले ही भारत मुस्लिम बहुल देश बन जायगा। इसके अलावा अरब देशों से आने वाले कराड़ों रुपये से हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन भी किया जा रहा है यह तथ्य भारत सरकार के गृह विभाग द्वारा स्वीकार किया गया है । हजारों साल पुराना "मीनाक्षी पुरम" मात्र ८०० हिन्दुओं के मुसलमान होते ही 'रहमतनगर' बना दिया गया। क्या भारत में हिन्दू बहुमत न रहने पर भी भारत बना रह सकेगा ? यह साधारण सी सामान्य ज्ञान की बात इन "दैवी प्रेरणा" से अभिभूत हमारे धार्मिक और राजनीतिक नेताओं, मठाधीशों और साधु सन्यासियों की बुद्धि

में क्यों नही समाती ?

अभी कुछ समय हुआ कि वैलूर– रामकृष्ण मिशन में एक बड़ी सभा हूई। उसमें तीन दिनों तक "सर्वधर्म सम भाव" विषय पर विचार विनिमय होता रहा और यह कि इस उद्देश्य की प्राप्ति कैसे की जावे। ऐसा लगता है कि सारे मज़हबों को प्रेम पूर्वक मिलाने की जिम्मेदारी हिन्दुओं की ही है। शिलांग के इस समाचार का जिसमें कहा गया है कि ईसाईयों ने रामकृष्ण मिशन के सन्यासियों की जम कर पिटाई की, इस सभा में कोई जिक्र नहीं हुआ। चेरापूँजी में ईसाईयों ने वहाँ के रामकृष्ण मिशन की पानी की लाइन काट दी, सब प्रकार से प्रताड़ित किया । देश के दूसरे हिस्सों में भी ईसाइयों द्वारा हि़न्दुओं पर किए जा रहे जुल्मों पर विचार करने की कोई आवश्यकता नही समझी गई। ऐसा लगता है कि दूसरे मतावलम्बियों की ठोकरें खाना और साथ ही साथ "सर्व धर्म सम भाव" की बातें करते रहना ही बहुत सी हिन्दू धर्म संस्थाओं का काम रह गया है।

'जगत जननी' की करतूत

बर्दवान विश्वविद्यालय के कुलपति ने बर्दवान नगर से एक लाख रुपया इकठ्ठा किया और उस धन को मदर टेरेसा को अर्पण कर दिया। बहुत से हिन्दू मिनिस्टरों और गणमान्य हिन्दू नागरिकों ने भी रुपया इकठ्ठा करने में जोरदार सहयोग दिया। टेरेसा के लिये "जगत जननी" जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया और एक विशाल आयोजन इस कार्य को संम्पन्न करने के लिए किया गया। अब इस रुपये से यह 'जगत जननी' हज़ारों हिन्दुओं को ईसाई बनायेंगी। निःसंदेह ईसाई राष्ट्रों ने टेरेसा को नोबिल–प्राइज़ इस कारण दिया कि उन्होंने भारत के ईसाई–करण में अद्‌भुत सफलता प्राप्त की है। उत्तरी पूर्वी भारत में होने वाले अधिकांश संकट उन्हीं धर्म परिवर्तित ईसाइयों के कारण हैं। यही वह लोग है जिन्होंने त्रिपुरा में हजारों हिन्दुओं को मौत के घाट उतार दिया। इन "जगत जननी" के पास उन कत्ल किये गए हिन्दुओं के प्रति शोकसूचक एक भी आंसू नहीं था। वह सिवाय ईसाइयों के किसी और की मदद या सेवा नहीं करतीं। मुस्लिम बंगलादेश ने टेरेसा को अपने देश में घुसने भी नही दिया, और इस हिन्दू समाज को देखो ! यह उन गायों की तरह है जो अपनी पीठ पर कसाई द्वारा काटी गई दूसरी गायों का मांस आराम से जुगाली करती हुई ढोती जाती है। इनमें सामान्य बुद्धि जैसी कोई भी तो चीज़ नही रह गई है। भले बुरे, उपयुक्त अनुपयुक्त , शत्रु या मित्र की परख करने की शक्ति ही जैसे समाप्त हो गई है। उन्हें हिन्दू धर्म की पवित्रता और उसकी महत्ता का कोई ज्ञान ही नहीं है। संसार में और कोई भी "सर्व–धर्म–समभाव" की बात नही करता। केवल हिन्दू को इसकी फिक्र है । हिन्दू यह क्यों नहीं समझता कि "सर्व–धर्म–समभाव" की बात शुरु करने से पहले उसे एक ऐसा देश चाहिए जहाँ यह सिद्धांत सर्वोपरि हो। कैसे दुःख की बात है कि इतनी मामूली सी बात भी उसकी समझ में नहीं आती।

वास्तविकता से दूर, यह धार्मिक दिखावा, ढोंग, जाल साज़ी और धोखाधड़ी का रूप लेता जा रहा है। एक लंबे अंतराल से चलने वाली आत्म–प्रवंचना ने हिन्दुओं को

कायर बना दिया है, जिससे वह अपनी आत्मरक्षा के कतई अयोग्य हो गये हैं। और यही कारण है कि हम जहाँ भी देखते है हिन्दू को ही पिटते हुए, भागते हुए और धर्म परिवर्तन करते हुए देखते हैं। यदि कोई समाज अपनी रक्षा करने में असहाय हो जाता है तो उसकी जीवित रहने की शक्ति ही समाप्त हो जाती है। उस समाज का कोई आदर नहीं करता, उस पर रहम भले ही करें। किन्तु अब तो स्थिति यह हो गयी है कि हिन्दुओं पर कोई रहम भी नहीं करता।

हिन्दू समाज खुला शिकारगाह

हिन्दू स्माज इसलिए एक वृहद् शिकारगाह बन गया है। सब शिकारी हिन्दुओं के पीछे पड़े हैं। समाज सेवा का जामा पहनकर और आर्थिक प्रलोभन दिखाकर हजारों शिकारी हिन्दुओं का शिकार करने उतर पड़े हैं। उनका मुख्य लक्ष्य है हिन्दू समाज। दिन प्रतिदिन इन शिकारियों की संख्या बढ़ती जाती है। ईसाई और मुस्लिम देशों से असंख्य वित्तीय सहायता मिलती है और कार्यकर्ता भी मिलते हैं। इस प्रकार के घृणित कार्य करने का इनको साहस कैसे होता है ? साहस होता है हिन्दू के चरित्र से। उन्हे कोई भय नहीं लगता है। हिन्दू कमज़ोर हैं। वह बड़ी–बड़ी बातें करते हैं परन्तु उन्हें बड़ी आसानी से खरीदा जा सकता है। केवल इतना ही नहीं वह अपने को बड़ा उदारवादी और ज्ञानी भी समझते हैं। ऐसा आत्म हत्या पर उतारु समाज और आपको कहाँ मिलेगा। इसलिए आखेट जारी है। अरब देशों से रुपया भारत आ रहा है। ईसाई प्रचारक खुले आम केवल हिन्दुओं के ही मोहल्लों में घूम रहे हैं। दूसरी जगह जाने की उनकी हिम्मत ही नहीं है। अब समय आ गया है कि हमारे धर्म गुरु, राजनेता और साधारण नागरिक इस कटु सत्य का सामना करें। योगी, साधु, वैष्णव भक्तों, तुम अपना ध्यान, कीर्तन, जप करो, अपने भक्तिभाव पूर्ण आँसुओं से इस देश को आप्लावित कर दो, किन्तु इस सबसे ऊपर एक बात याद रक्खो कि हम एक हिन्दू राष्ट्र हैं। भगवान न करें यदि कभी यह हिन्दू शक्ति कमज़ोर हो गई, या हिन्दू अल्पसंख्यक हो गए तो न तुम ध्यान कर पाओगे, न जप, न कीर्तन। राजनैतिक कार्यकर्ताओं को भी अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि तुम्हारे वाद, चाहे मार्क्सवाद हो, चाहे गाँधीवाद, या कोई दूसरा वाद यह तभी तक हैं जब तक यह देश हिन्दू देश है। इन मार्क्सवादियों, गाँधीवादियों इत्यादि को यह नहीं भूलना चाहिये, कि सब वांद पूर्वी बंगाल में केवल इसलिए समाप्त हो गए क्योंकि हिन्दुओं ने वहाँ अपना बहुमत खो दिया था। प्रमोददास गुप्ता, पश्चिमी बंगाल में बहुत दहाड़ते थे। किन्तु अपनी जन्म भूमि फरीदपुर में मार्कसिज्म का कोई प्रचार नहीं कर सके। प्रफुल्ल सेन स्वप्न में भी गांधीवाद का विचार अपनी जन्म भूमि 'खुलना' में नही कर सके। ठाकुर अनुकूल चन्द के शिष्य कहते फिरते हैं कि उनके गुरु अवतारी पुरुष हैं, और केवल भगवान से ही दूसरे नम्बर पर हैं। उन्होंने अपने शिष्यों से बार बार कहा कि सारे धर्म एक समान हैं। किन्तु पाकिस्तान बनने से ठीक पहले वह पबना में अपना मुख्य मठ छोड़ कर देव घर भाग आये। उनकी दैवी बुद्धि ने चाहे कितनी ही ऊंची बातें कहीं हो किन्तु उनकी सामान्य बुद्धि ने कहा कि चलो 'हिन्दुओं के देश में भाग जाओ । वह हिन्दू बाहुल्य देश है। वहाँ पर तुम अपनी

सारी ब्रम्हशक्ति लगाकर भी अपनी रक्षा नही कर सकोगे और गुरु अनुकूल चन्द्र भाग कर भारत आ गए।

यदि हिन्दू बहुमत न रहा तो ?

यदि हिन्दू अल्पसंख्यक हो जाते हैं तो ब्रम्ह की पूजा और भक्ति कौन करेगा ? यह साधारण सी बात इन तमाम गुरुओं और उनके मानने वालों की समझ में आना चाहिए। इस बंग भूमि में एक और भी गुरु हैं। उनका नाम जन्म से 'ठाकुर बालक ब्रम्हचारी है। उनका जन्म ढाका जिले के एक छोटे से गांव मेदनी मण्डल में हुआ था। उनकी सारी आध्यात्मिक शक्तियाँ बिल्कुल बेकार हो गयीं। वे भी अपनी जान बचाने के लिए, दौड़ पड़े। और कहाँ को ? एक हिन्दू बाहुल्य देश की ओर। स्पष्ट है ब्रम्हा की भी शक्तियां गायब हो जाती है जहाँ से हिन्दू गायब हो जाते हैं या जहाँ वह अल्पसंख्यक हो जाते हैं। और यही हाल बालक ब्रम्हचारी का भी हुआ। यह कोई आध्यात्मिक आडम्बर नहीं है और न यह विचार क्रोधवश प्रकट किये गए हैं। सीधे सादे यही तथ्य हैं। किन्तु दुर्भाग्यवश इन धर्म–गुरुओं ने उन खतरों से कुछ नही सीखा जिनसे यह बाल–बाल बचे। उपरोक्त घटना के बाद उनके शिष्यों ने एक ग्रामोफोन रिकार्ड बनाया जिसकी शुरुआत अल्लाहो अकबर के अज़ान से होती है और फिर कुछ कथा और हिन्दू शास्त्रों के पाठ। कथा में कहा जाता है, कि अल्लाह ही राम है, नारायण है। अल्लाह और राम का सह–अस्तित्व पूर्वी बंगाल में सम्भव नहीं हुआ। और अल्लाह के अनुयाइयों ने ठोकरें मारकर उनकों उनके उस घर और सम्पत्ति से भगा दिया जो उनके पुरखों ने पिछली १४ पीढ़ियों में अपनी गाढ़ी मेहनत से अर्जित की थी। उसके बाद भी इस प्रकार के गीत गाना सचमुच ही बड़ी उदारता और सहन शीलता का परिचय देता है। किन्तु साथ साथ क्या यह भयंकर विमूढता, सामान्य ज्ञान.हीनता, और आत्महत्या प्रवृत्ति – की भी निशानी नहीं है ? इस प्रकार का उदार और पोंगापन्थी समाज कभी जिन्दा नहीं रह सकता और यही कारण है कि जब जब भी बाहर से आक्रमण हुआ है यह मार्क्सवादी, गाँधीवादी, पूर्णब्रम्हगुरु, जन्म सिद्ध ब्रम्हचारी अपनी धोती लंगोटी छोड़कर भाग खड़ें होते हैं। अपने अनुयायियों को बचाना तो दूर, उनकी सहायता का भी ध्यान नहीं आता। उस समय उनका उदारवादी ज्ञान, वाक्य पटुता और आत्मानुभूति धरी की धरी रह जाती है। उनके ध्यान में आना चाहिए था कि भारत को धर्म की मजबूत बुनियाद बना लें, हिन्दू समाज को संगठित कर उस बुनियाद पर खड़ा कर लें। जैसे शरीर जीवन का सम्बल है वैसे ही समाज धर्म का सम्बल है। समाज नही रहेगा तो धर्म का आचरण कौन करेगा। यदि हिन्दू समाज संगठित नहीं है तो हमारे तैतिस कोटि देवी–देवता, हजारों धार्मिक पथ प्रदर्शक, धर्म गुरु, भगवानों और राजनीतिक नेताओं का जीवन ही संकट में पड़ जायेगा। या तो वह भाग जायेंगे या मारे जायेंगे और या उन्हें धर्म परिर्वतन करना होगा।

कहते हैं कि विभाजित पश्चिमी बंगाल में मुसलमान केवल ३५ प्रतिशत है, जिस दिन भी मुस्लिम ३५ से ५१ प्रतिशत हो जाएंगे, न वहाँ गाँधीवाद रहेगा, न मार्क्सवाद, न

भजन, न कीर्तन, न तिलक, न पूजा और न आरती। हमें यह भी बताने को कोई नही रहेगा कि "सब धर्म एक समान" है। यह कि "मजदूर का कोई मज़हब नहीं होता है।" यह कि 'हिन्दू मुस्लिम भाई भाई हैं और यह देश धर्म निरपेक्ष है।" तुम हिन्दुओं की ही बात क्यो करते हो ? पूर्वी बंगाल में आज कोई भी यह बढ़िया बातें नहीं करता। कर ही नही सकता। जब प्रसिद्ध काली वाड़ी मन्दिर ढाका में तोपों के गोलों से ढहा दिया गया तो किसी ने उंगली नहीं उठाई जब कि प्रत्येक आदमी इस नितान्त सत्य को जानता था। इन सब तथ्यों को समझ कर ही हमको अपने धर्म, राजनीति, समाज तथा स्वयं अपनी सुरक्षा का विचार करना चाहिए।

यदि हिन्दू असंगठित रहे

अगर हिन्दू कमज़ोर, असंगठित और अल्पसंख्यक हो गये तो केवल उनके धर्म पर ही हमला नहीं होगा, उनके जीवन और सम्पत्ति पर भी हमला किया जायगा। यह केवल पाकिस्तान का या पूर्वी पाकिस्तान (बंगला देश) का ही इतिहास नही है। यह पिछले एक हजार वर्षो की कहानी है कि किस प्रकार से हिन्दू देवी देवताओं को अपवित्र किया गया और उनकी प्रतिमाएं तोड़ी गयीं। उससे उन देवी देवताओं अथवा हिन्दुओं के आत्मसम्मान में किसी प्रकार की कमी नहीं हुई है। प्रश्न यह उठता है कि क्या हमारे देवी देवताओं का पराक्रम केवल हमारी धर्म पुस्तकों तथा प्रवचनों तक ही सीमित है ? यह प्रश्न इतना मूर्खतापूर्ण नहीं है। केवल सौ वर्ष हुए इस देश की जनसंख्या ३० करोड़ थी और देवी देवताओं की संख्या ३३ करोड़ । इसका मतलब यह हुआ कि यदि हर मनुष्य की रक्षा पर एक भी देवी देवता नियत हो तब भी हम दूसरे देशों को वहाँ की जनसंख्या की रक्षा के लिए ३ करोड़ देवी देवता निर्यात कर सकते थे । तो फिर ऐसा क्यों हुआ कि हमारे अन्दर इतनी बीमारियां दरिद्रता, कुपोषण, निरक्षरता, ढोंग, भ्रष्टाचार और स्वार्थपरता पनप रहे है (और क्यों प्रत्येक व्यक्ति का रक्षक एक से अधिक देवता होते हुये भी हिन्दुओं को १२०० वर्ष तक विदेशियों के हाथो अकथनीय अत्याचार भोगने पड़े – अनुवादक) भारत में आज भी ३४ लाख मठ और मन्दिर हैं। लगभग ८५ लाख साधू, सन्यासी, आश्रमवासी और संत महात्मा इस देश में है। उनका मुख्य कर्तव्य है हिन्दू समाज में आत्मवल और साहस का संचार करना। जब आवश्यक हो उचित सलाह देना और उनका मनोबल बढ़ाना । किन्तु महा आश्चर्य तो यह है कि यही वह लोग हैं जो सबसे पहले और सबसे अधिक भयभीत होते हैं, और वह भी तब जब पादरी और मौलवी सब मिलाकर कुछ हजार ही हैं। ऐसा क्यों है ? यह प्रश्न कई बार पूछा जा चुका है और उसमें कहीं न कहीं कोई रहस्य अवश्य है।

संकीर्ण स्वार्थपरता

वास्तविकता यह है कि हम लोग स्वार्थी हैं और यही वह बड़ा रहस्य है। चाहे कोई साधू हो, चाहे सन्यासी, चाहे व्यापारी, राजनेता, शिक्षक या बुद्धिजीवी, प्रत्येक हिन्दू अत्यधिक आत्म–केन्द्रित होता है। हिन्दू का सारा प्रयास अपने तक और अपने परिवार तक

केन्द्रित रहता है। उसकी सारी विचारधारा और कर्म–परायणता वहीं तक सीमित है। उसकी सारी प्राण शक्ति उसी में खर्च हो जाती है। अपने समाज में उसे कोई विश्वास नहीं है। विश्वास होता है अपने देवता पर, अपने गुरु पर अथवा ज्योतिषी पर और वह उसी पर आश्रित रहता है। एक हिन्दू के जीवन में राज्य, समाज या देश की कोई महत्ता ही नहीं है। यही वह बड़ा रहस्य है और धोखा भी। इसी धोखे और ढोंग ने सारे समाज को आत्मविश्वास विहीन कर दिया है। यह एक छिद्रान्वेषी समाज बन कर रह गया है, और अपना ही छिद्रान्वेषण करता रहता है।

क्या हिन्दू समाज का संगठन करना संकीर्णता है ?

यदि हिन्दुओं को संगठित करने का कोई प्रयत्न करता है तो यही समाज उसको बहुत संकीर्ण समझता है यद्यपि अपने दैनिक जीवन में वह अपना समय छोटे–छोटे दल, या क्लब बनाने में जिनकी बुनियाद घोर जातिवाद, पार्टीवाद, ईर्ष्या और विवेकहीन टीका टिप्पणियों पर आधारित होती है, खर्च करते है। अपने पड़ोसियों में उनका कोई मित्र नहीं होता क्योंकि उनसे मुकदमेबाजी होती है। वह अपने माता पिता की घोर उपेक्षा करते हैं किन्तु सांई बाबा के पुजारी हैं। यही हैं वे लोग जो हिन्दू मुस्लिम एकता के नारे लगाते हैं। संसार के सारे मजदूरों को संगठित करना चाहते हैं। वह अपने भगवान को प्रार्थना, भजन और कीर्तन से मूर्ख बनाना चाहते हैं जबकि अपना सारा समय लोगों को छलने और धोखा देने में लगाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस तरह के लोगों में, जो अपने ही आत्महित के विरुद्ध कार्य करते हैं, एक प्रकार की आत्म–प्रवंचना तो पैदा हो जाती है किन्तु "सामान्य बुद्धि" वाले मामले में वह नितान्त कोरे होते हैं। वह ढोंग के बल पर जीवित रहना चाहते हैं।

वह समाज जो अपने ही विरूद्ध कार्य करता है धीरे–धीरे उसके पैरों के नीचे से धरती खिसक जाती है। आज हमारा धर्म, राजनीति, और अब दूसरे कार्यकलाप भी असत्य की बुनियाद पर खड़े है और यह हिन्दुओं के इतिहास के अनुकूल भी है। कम से कम उस इतिहास के अधिक भाग के जिसमें आत्म रक्षा का कोई सामूहिक प्रयत्न नहीं किया गया।

उस मरीज का क्या करे कोई,
जो अपने मर्ज को ही दवा समझे ?

संघे शक्तिः कलौयुगे

श्री गौरांग ने कहा था "संघे शक्तिः कलौयुगे" कलियुग में संगठन ही शक्ति है। उनका यह उपदेश हम बिल्कुल भूल गए। ऐसा कोई भी हिन्दू देवी देवता नहीं जिसके हाथों में हथियार न हों। किसी भी हिन्दू के घर जाइए तुम्हें देवी देवताओं की बहुत मी तस्वीरें टंगी मिलेंगी। लेकिन घर में साँप मारने के लिए एक छड़ी नही मिलेगी।

भारत माँ की पूजा याने समाज की सेवा

स्वामी विवेकानन्द द्वारा स्थापित राम कृष्ण मिशन में पूरे वर्ष दरिद्रों की उपेक्षा की

जाती है। केवल उसी समय जब कही बाढ़ आ जाती है दरिद्र नारायण प्रकट हो जाते हैं। बाकी समय में कोई उनकी परवाह नही करता है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था देश को संगठित करना परम आवश्यक है। अगले ५० वर्षो तक एक मात्र ध्येय भारत माँ की पूजा है। उनका मतलब था समाज की सेवा। हम उनकी इस बात को भूल गए। जड़ो में पानी डालने के बजाय टहनियों और पत्तों को सींच रहे हैं। इसलिए पेड़ मरता जा रहा है। हमारा अपना जीवन भी घोर संकट में है। हमको याद रखना चाहिए कि यदि समाज जीवित रहेगा तो ही हम सब भी जीवित रहेगे। सब विचारवान हिन्दुओं को इस पृष्ठ भूमि में अपने विचार एक दिशा में केन्द्रित करना है। कोई दूसरा कार्य इतना आवश्यक नहीं है। हमारी सामान्य बुद्धि और हमारा पुराना अनुभव हमकों बताता है कि इस परमावश्यक कार्य में एक क्षण भी देर नहीं करनी चाहिए। हिन्दुओं को एक ऐसा मजबूत संगठन बनाना चाहिए जिसमें छुआछूत, बिरादरीवाद, प्रांतवाद जैसी बीमारियां न हो। पेशेवर राजनीतिज्ञों को भी इस नियम का अनुसरण करना चाहिए। यदि हिन्दू समाज समाप्त हो गया तो वे भी समाप्त हो जायेगे। कोई भी राजनीतिक दल चाहे कितना भी असाम्प्रदायिक क्यों न हो उसकी मजाल नही कि वह मुस्लिम बहुल क्षेत्र से किसी उम्मीदवार को जिता कर ले आये। हिन्दुओं का संगठित होना केवल अपने लिये ही नहीं थोड़े से उन मुसलमानों के लिये भी आवश्यक है जो उदारमना हैं। मुस्लिम समाज में छागला जैसे व्यक्तियों के लिये कोई स्थान नहीं है। यदि वह पाकिस्तान या ईरान में होते तो क़त्ल कर दिये गये होते। किन्तु हिन्दू समाज ने उनको सम्मान दिया और उनकी सेवाओं की सराहना की। हिन्दुओं ने संगीत साम्राज्ञी नूर जहां को अपना कर सम्मान दिया, किन्तु जब उसने कहा कि गीत उसकी ईशप्रार्थना और संगीत उसका खुदा हो गया है तो यह मांग की गई कि उसको दुबारा मुस्लिम धर्म की दीक्षा लेनी पड़ेगी क्यों कि अपने उपरोक्त बयानों द्वारा वह मुस्लिम नहीं रही। दाऊद हैदर नाम के एक बंगलादेशीय कवि ने पैगम्बर मुहम्मद पर कुछ टीका–टिप्पणी कर दी थी। उसके मुस्लिम साथियों ने इस कसूर पर उसे कत्ल करने का विचार किया था। उसने भाग कर भारत में शरण ली। यदि भारत मुस्लिम राज्य होता तो उसको निश्चित ही फांसी दे दी गई होती।

देश के उत्थान के लिए स्वस्थ हिन्दू समाज आवश्यक है– हिन्दू संगठन से सहयोग हर हिन्दू का कर्तव्य है।

किसी भी हिन्दू राज्य में एक मुस्लिम मुख्य मंत्री हो सकता है जैसे बिहार में अब्दुल गफूर और महाराष्ट्र में अन्तुले, किन्तु क्या कोई भी आदमी काश्मीर में एक हिन्दू मुख्य मंत्री की बात सोच सकता है ? यह सर्वथा असम्भव है। इसलिए हिन्दू समाज को देश के उत्थान के लिए पूर्णतया स्वस्थ्य रखने की आवश्यकता है। जो लोग हिन्दू समाज को संगठित करने की कोशिश कर रहे है उनको सहयोग देना हर हिन्दू का पहला कर्तव्य है। भारत सेवाश्रम संघ, विश्व हिन्दू परिषद*, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ*, आर्यसमाज आदि यह कार्य कर रहे है। इनको सब प्रकार से सहयोग देना हर हिन्दू का कर्तव्य है। उदार न होते हुए भी हम उदारता का

*यह संगठन इस समय शासन द्वारा प्रतिबंधित कर दिये गये हैं।

ढोंग न करें। इन लोगों को प्रतिक्रियावादी न कहें। थोड़ी सी सामान्य बुद्धि का होना आवश्यक है। हमारी वैचारिक भूलभुलैया के कारण आधा भारत पाकिस्तान बन चुका है। पाकिस्तान, बंगलादेश, और खण्डित भारत में १२ करोड़ मुसलमान और एक करोड़ ईसाई है। बहुत थोड़े से समय में विश्व हिन्दू परिषद एक लाख से अधिक मुसलमान व ईसाईयों को हिन्दू धर्म में वापस लाने में सफल हुई है। और भी बहुत से लोग अपने पूर्वजों के धर्म में वापस आयेंगे। हरे कृष्ण सम्प्रदाय वाले अंच्छा काम कर रहे है। हमें उनकी उंन्चाईयों को अपने बौनेपन से नहीं नापना चाहिए। माइकेल स्कांट, और फादर फेरार को देशद्रोह के अपराध में देश से निकाला गया। अभी हाल ही में फादर डी.सौजा की गिरफ्तारी हुई है। ये क्रिश्चियन फादर ही असली विदेशी एजेंट हैं। यदि इस्कॉन वाले विदेशी जासूस होते तो वह सारी दुनिया में हिन्दू मन्दिर न बनाते फिरते । वह यह कष्ट क्यों उठातें ? दूसरी ओर बन्दूक और तोपें बनाने की फैक्ट्रियां विहार शरीफ और मुरादाबाद के मुस्लिम मुहल्लों में पकड़ी गई हैं। लखनऊ के मुस्लिम होटल में भयंकर डायनामाइट की छड़ें पकड़ी गई थीं।

मुसलमान और ईसाई खुल्लम खुल्ला, हिन्दू समाज की कतई परवाह न करते हुए, राष्ट्रद्रोही गतिविधियों में लीन हैं।

हिन्दू समाज उठने के लिए अंगड़ाई ले रहा है।

अब पहली बार हिन्दू समाज उठने के लिए अंगड़ाई ले रहा है। इस जाग्रति से देश द्रोहियों को छोड़कर किसी को घबड़ाने की आवश्यकता नहीं। क्या हिन्दुओं ने एक भी गिरजाघर को या मस्जिद को नष्ट किया है ? हमारे पूरे इतिहास में ऐसी एक भी मिसाल नहीं मिलेगी। किन्तु आज भी यदि कोई मुसलमान किसी हिन्दू स्त्री को भगा ले जाता है तो किसी भी मुसलमान के मुख से उसके विरोध में एक शब्द नहीं निकलता। अपनी इस खामोशी से वह इस प्रकार के दुराचार को बढ़ावा देते है। मैं किसी दुर्भावना से ऐसा नही कह रहा हूँ बल्कि समाज की वर्तमान स्थिति का सही आंकलन कर रहा हूँ। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिन्दू को भी जीवित रहने का अधिकार है।

'हम दो हमारे दो' 'हम पांच हमारे पच्चीस'

किसी भी सभ्य देश में प्रत्येक नागरिक के लिए समान कानून होता है। किन्तु इस देश में मुसलमानों के लिए अलग कानून है। एक हिन्दू एक ही पत्नी रख सकता है और इसी बुनियाद पर वह दो बच्चों की बात सोचता है, किन्तु मुसलमान चार विवाह कर सकता है और इन चार से अनगिनत बच्चे पैदा कर सकता है। हिन्दू के लिए नारा है 'हम दो हमारे दो'। मुसलमान का नारा है "हम पांच हमारे पच्चीस"। इस देश को मुस्लिम बाहुल्य इस्लामी राज्य बनाने में इस रफ्तार से कितना समय लगेगा ? इस देश के तमाम राजनीतिक दल उंन्ची–उंन्ची बातें करते हैं और कुछ तो अरब देश के धन से खरीदे जा चुके है और इस प्रकार उन्होंने इस देश को मुस्लिम देश बनानें की गहरी साज़िश की है। उन लोगों को जो उनकी साजिश

को भांप गए है और उनके विरुद्ध आवाज उठाते हैं, उन्हें यह अरब के एजेन्ट प्रतिक्रियावादी कहते है, और इस प्रकार जनता का ध्यान उधर से हटाने की कोशिश करते हैं।

इस दोहरे आक्रमण से देश की रक्षा कौन करेगा ? केवल संगठित हिंदू समाज ही ऐसा कर सकता है। यदि पाकिस्तान और बंगला देश जैसे मुस्लिम देश में बहुविवाह को गैर–कानूनी करार देकर परिवार नियोजन लागू किया जा सकता है तो क्या कारण है कि भारत मे ऐसा न किया जाए ? क्या यह इसलिए है कि हमने बुद्धिहीन नेताओं की एक फौज खड़ी कर ली है ? हमें अनिवार्य परिवार नियोजन लागू करने के लिए नेताओं और दलों पर ज़ोर डालना चाहिए। हमें हिंदू–कोड विल को भंग करने की माँग करनी चाहिए।

हिन्दू नेताओं ने हिन्दू भावनाओं की ओर कोई ध्यान दिया ही नही। वह समझते हैं कि हिन्दू संगठित नहीं है। उनकी स्मरण शक्ति कमज़ोर है और वह भूतकाल के इतिहास के पाठों को भूल गए हैं। इसलिए वह स्वार्थवश हिन्दू हितों की हानि करते हैं। हिन्दुओं के गौरव का तिरस्कार करते हैं। गोवध निषेध के बारे में चुप हैं। यदि घुसपैठिया मुसलमान हैं तो यह लोग उसके खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोलते। तीन लाख मुस्लिम घुसपैठिये बंगला देश से पश्चिमी बंगाल में घुस आयें हैं। मटिया बुर्ज और पार्क सरकस नामक कलकत्ते के इलाकों में और मुर्शिदावाद में वह जम गये हैं। अकेले कलकत्ते में लगभग चार लाख मुस्लिम घुसपैठिए हैं जिनके नाम सरकारी कागजों पर दर्ज हैं। हर राजनीतिक दल का संरक्षण इनको प्राप्त है। एक ओर तो कम्युनिस्ट पार्टी इन घुसपैठियों को राशन कार्ड वितरित करती है, और दूसरी ओर कांग्रेस पार्टी निर्वाचन सूचियों में उनका नाम दर्ज कर देती है। उनका उद्देश्य केवल आने वाले चुनावों में जीतना है, फिर समाज का कुछ भी क्यों न हो।

कलकत्ते में सड़कों को खाली कराने के अभियान में ज्योतिवसु और जतिन चक्रवर्ती ने तमाम हिन्दू ठेले वालों को पटरियों से भगा दिया किंन्तुं उन मुस्लिमों के विरुद्ध वे कुछ न कर सके जो अपने को बिहार में रहने वाले बताकर बंगला देश से वहाँ घुस आए है और उन्हीं पटरियों पर सामान बेचते हैं। बंगाल के डिप्टी स्पीकर मियां कलीमुद्दीन इन मुस्लिमों के साथ खड़े होते हैं। वे मुस्लिम कांनफ्रेन्स के प्रधान भी हैं, और हर मीटिंग में जोर शोर से बयान देते है कि वे मुस्लिम पहले हैं और हिन्दुस्तानी बाद में। कोई भी हिन्दू नेता उनके इस बयान पर आपत्ति नहीं करता। समय आ गया है जब हम गहराई में जाकर विचार करें कि इस देश के भविष्य का प्रहरी कौन है ? अगर हम सोच विचार ही करते रह गए और तुरन्त स्थिति में सुधार लाने के लिए ठोस कदम न उठाए तो शायद हमकों समय ही नही मिलेगा। आप जितना समझते हैं उससे कहीं अधिक देर हो चुकी है। अधिक देर हो जाने से सिवा पछताने के कुछ हाथ नही लगेगा।

गोरक्षा का सवाल

आज हमारे धार्मिक पथ–प्रदर्शक, राजनीतिज्ञ, पत्रकार, व लेखक सब पर 'दैवी

प्रेरणा' का भूत सवार है। उनका एक मात्र ध्येय हिन्दू धर्म व हिन्दू संस्कृति की आलोचना करना रह गया है। वे अत्यधिक सभ्य होने का बहाना करते हैं और इस सभ्यता का सबूत वह हिन्दू मान्यताओं को नष्ट करके देना चाहते है। 'आनन्द बाजार पत्रिका' और 'आजकल' जैसे पत्र गौ-मांस खाने की वकालत करते हैं। यदि कोई पाठक उन्हें कोई विरोध पत्र लिखता है तो वह प्रकाशित नही किया जाता। प्रगतिशीलता के आवेश ने उचित अनुचित के विचार को समाप्त कर दिया है। वह अच्छी तरह जानते है कि इस्लाम में गाय की कुर्बानी अनिवार्य नहीं है। दूसरी ओर यह भगवान गोपाल कृष्ण की भूमि है। यहाँ गाय का बड़ा सम्मान है। यदि किसी गाय को कत्ल किया जाता है तो ९५ प्रतिशत लोगों की आत्मा दुखी होती है। महात्मा गांधी ने कहा था कि मुझे गौकुशी बन्द करना भारत की स्वतन्त्रता से भी अधिक प्रिय है। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के खाने में गौ मांस का निषेध कर दिया था। भारतीय संविधान में गौ-हत्या रोकने का स्पष्ट निर्देश है। सर्वोच्च न्यायालय ने गौ-बध के विरोध में आदेश दिया है। किन्तु यह सब बेकार हैं। संविधान, सर्वोच्च न्यायालय, भारत का बहुसंख्यक हिन्दू समाज इन सबकी उपेक्षा की जा सकती है। क्योंकि हिन्दू समाज संगठित नहीं है। मुसलमान संगठित हैं। इसलिये उनकी असंवैधानिक मांगे भी मान ली जाती है। अगर एक हजार तर्कों द्वारा सुअर का मांस खाने की वकालत की जाय तो कोई उसके पक्ष में कलम नही उठायेगा।

अपमान जनक घटनायें

नाटकों, फिल्मों में, हिन्दुओं के पूज्य देवताओं की योजनापूर्वक आये दिन खिल्ली उड़ायी जाती है। हिन्दू, मुस्लिम सौहार्द दिखाने के लिए मुसलमान लड़के द्वारा हिन्दू लड़की को भगा लिया ज़ाना दिखाया जाता है। नायक और नायिका जब कठिनाइयों में होते है तो वह गिरजाघर में या मस्जिद में शरण लेते दिखाये जाते है। हिन्दू पंडित और पुजारी ठग और बदमाश करके दिखाये जाते हैं। वे अपनी बोतलों में शराब व पैंटों में अफीम ले जाते हुए स्मगलर व बदमाश चित्रित किये जाते है। मौलवी व पादरी प्यार और सौहार्द के अवतार दिखाये जाते है।

जर्मन भाषा में लिखे गये ब्रेट नाटक (Brecht's Drama) का किसी ने बंगला में अनुवाद किया और अनुवाद में हिन्दुओं के ब्रम्हा, विष्णु, महेश्वर को तीन विदूषकों के वेश में पेश किया। उनके मुंह से गंदी बातें कहलायी गयी । किसी भी हिन्दू भक्त को इस से तकलीफ नहीं पहुंची। सच तो यह है कि निम्न श्रेणी के पत्रकारों और नाटककारों के मनों में हिन्दू दर्शकों के प्रति थोड़ा सा भी सम्मान नहीं है।

इस देश के पत्रकार हिन्दू मुस्लिमों के बीच हुये दंगों को बिना नाम दिये "दो सम्प्रदायों के बीच झगड़ा" लिखते है। इस प्रकार की संदिग्ध भाषा का प्रयोग इसलिए किया जाता है कि इससे आगे स्थिति खराब नहीं होगी। किन्तु नीयत सत्य को छिपाने की होती है। और यदि कभी हिन्दू समाज के दो वर्गों में झगडा होता है तो मोटे-मोटे अक्षरों में "सवर्ण

हिन्दूओं द्वारा हरिजनों पर भयानक अत्याचार" की खबरें छापी जाती है (भले ही उस झगड़े का वर्ग द्वेष से दूर का भी सम्बन्ध न हो) वह ऐसा क्यों करते है ? क्योंकि अधिकतर पत्रकार हिन्दू विरोधी हैं। उन्हें ईश्वरीय ज्ञान भले ही प्राप्त हो किन्तु सामान्य व्यवहारिक ज्ञान शून्य है। वे नहीं चाहते कि हिन्दू समाज बलवान बने। मालदा में हुये दंगो के दौरान पत्रकारों ने लिखा "मुसलमानों और घोष परिवारों के बीच दंगा।" क्या इसका मतलब यह है कि घोष परिवार हिन्दू नहीं हैं ? यह महाशय आसाम की सही–सही परिस्थिति का चित्रण जनता के सामने आज भी नहीं रख पाये। उन्होंने यह दिखाने की कोशिश की है कि असम में वही पुरानी 'बंगाली भगाओं"समस्या है। इन पत्रकारों ने जान–बूझकर लगातार पब्लिक को भ्रमित करने की कोशिश की है। अगर यह सत्य है कि असमी बंगालियों को खदेड़ रहे है तो ऐसा क्यों है कि एक भी बंगाली मुस्लिम आसाम से नहीं भगाया गया ? क्या बंगाली का अर्थ केवल बंगाली हिन्दू है ? पूर्वी बंगाल के सब निवासी बंगाली है। फिर ऐसा क्यों है कि बंगला देश से बार--बार हिन्दू ही भगाये जाते है। यह पत्रकार सीधे प्रश्न का सीधा उत्तर नहीं दे सकते हैं। इन्होंने हमेशा आसाम की समस्या को घटाकर बताने की कोशिश की है। किन्तु असलियत यह है कि शायद ही कभी पहले इस पूरे देश में इतना बड़ा भावनात्मक आन्दोलन हुआ हो। यदि इसकी सच्चाई को जानना है तो देश के उर्दू अंखबारों की हलचल को देखने से ही स्थिति का सही आकलन हो जायेगा। आसाम आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य बंगला देश से धुस आये मुस्लिम घुसपैठियों को वहाँ से निकालना है। यह आन्दोलन हिन्दू शरणार्थियों के विरुद्ध नहीं है।

कोई भी हिन्दू वह किसी भी देश से आया हे इस देश में घुसपैठिया नहीं है। अजनबी भी नहीं है। वह शरणार्थी भी नहीं है। यह देश उसकी मातृभूमि है। बंगला देश से उन्तीस लाख मुस्लिम आसाम में आये हुए हैं। इस समस्या का समाधन किसी के पास मालूम नहीं होता। होठों पर लल्लो–चप्पो और मस्तिष्क में 'ईश्वर प्रेरणा' लिये हुए पूरा हिन्दू समाज उस मनुष्य की तरह अपनी मौत का इन्तजार कर रहा है जैसे कोई मृत्यु की तरह मुंह बांये रेतीली दल दल पर खडा हो। दुनिया का सबसे अधिक उदारवादी सहनशील और अहिंसक समाज जो परमात्मा का दर्शन केवल मानव मात्र में ही नहीं वरन् चिड़ियों चौपायों और कीड़े मकोड़ों में भी करता है वह हिन्दू समाज आज भयानक खतरे में है। यह सत्य तथ्यों, तर्कों, आंकड़ों की रोशनी में नग्न होकर हमारे सामने खडा है। भयानक अनिष्ट से बचने के लिये हिन्दुओं को जल्द से जल्द संगठित होना नितान्त आवश्यक है। चाहे कोई कुछ भी कहे भारत का दर्शन हिन्दू दर्शन है। यह गंगा की तरह है जिसमें हरिद्वार से कलकत्ता तक सैकड़ों नदी नाले मिलते चले जाते हैं, किन्तु गंगा नहीं बदलती, वह वैसी ही शुद्ध रहती है जैसी पहले थी। हिन्दू संस्कृति भी ऐसी ही है। इसीलिए यह परम आवश्यक है कि हिन्दू संस्कृति जो लाखों वर्ष पुरानी है, जो संसार में सबसे श्रेष्ठ और नैतिक है, उसको इन मूर्ख राजनीतिज्ञों, बौने विचार के बुद्धिजीवियों और वेश प्रताप से पूजे जाने वाले साधु सन्तों से बचाया जाय। यह पूरे हिन्दू

समाज के जीवन मरण का प्रश्न है।

किन्तु यदि हमें सफलता न मिली तब ? कालान्तर में आपको हिन्दुओं का दर्शन केवल इस देश के विभिन्न चिड़िया घरों में ही हो सकेगा। वह गैर हिन्दू पिता, जो जबर्दस्ती मुसलमान बना लिये गये होंगे, अपने बच्चों का हाथ पकड़कर चिड़ियाघरों में ले जायेगे। और उन्हें बतायेंगे देखो किसी जमाने मे इस देश में यह जन्तु होते थे जो संख्या में बहुत थे। उन्हें हिन्दू कहा जाता था। उनके पास बेद, उपनिषद और गीता नाम की बहुत अच्छी पुस्तके थीं। उनके पास गाँधीवाद, मार्क्सवाद और समाजवाद जैसें वाद भी थे। किन्तु उनके पास सामान्य बुद्धि की कमी थी और इसलिये वे आज समाप्त हो चुके है। केवल थोड़े जीवित हिन्दू हमारे चिड़िया घरों में बचे है। जब वे मर जायेगे तो उनको म्यूजियम में स्थान दिया जायेगा।

इस्लाम केवल एक मजहबी विचारधारा और कुछ प्रार्थनाओं का संग्रह नहीं है अपितु एक पूर्ण प्रणाली है जो अपना एक सुधारात्मक प्रोग्राम लागू करना चाहता है-- इसके लिए वह तमाम इंसानों को निमंत्रण देता है। यह दावत जो लोग भी कबूल कर लें--इस्लामी समाज के सदस्य बन जाते हैं--यह पार्टी वजूद में आते ही अपने जीवन उद्देश्य के लिये जिहाद शुरू कर देती है। इसके वजूद में आने का उद्देश्य ही यह है कि यह गैर-इस्लामी सत्ता को मिटाने की कोशिश करे और उसके स्थान पर शरीयः शासन और इस्लाम का दूसरे सभी धर्मों पर वर्चस्व स्थापित करे। मुसलमान केवल धार्मिक प्रचारक नहीं है अपितु खुदाई फौजदारों की जमाअत हैं- (आयत) -- (अनुवाद)। उनसे जंग करो यहाँ तक कि फितना (बिगाड़) बाकी न रहे और इताअत (मान्यता) सिर्फ खुदा के लिए हो जाये अर्थात भगवान की मान्यता और जीवन विधि जैसे इस्लाम बतलाता है, कायम हो जाये।

(जिहाद फीसबीलिल्लाह- पृ.२२ से २४, जमाअते इस्लामी के निर्माता मौलाना अबुलआला मौदूदी के १९३९ में दिये गये भाषण का संपादित और संक्षिप्त अंश। पुनः प्रकाशित फरवरी १९६८ व जनवरी १९७८, मरकजी मकतबा जमाअते इस्लामी हिन्द, दिल्ली-६)

आत्म हत्या पर कटिबद्ध हिन्दू समाज

लेखक- प्रो. डा.रघुवीर, एम.ए., पी.एच.डी., डी.लिट. लाहौर। (मूल अंग्रेजी)

अनुवादक- पुरुषोत्तम

(नोट :- डा. रघुवीर ने यह लेख अर्ध शताब्दि से भी अधिक समय पहले लिखा था। पाठक देखेंगे कि भारत और हिन्दू समाज के लिये यह आज भी उतना ही अर्थ पूर्ण है जितना उस समय था। यदि उस समय 'ब्रिटिश विरोधी' भाषा की कटुता से किसी व्यक्ति की राष्ट्रीयता नापी जाती थी तो उसका मापदंड आज हिन्दू और हिन्दुत्व विरोधी भाषा की कटुता हो गया है। यदि 'हिन्दुस्तानी' भाषा की भारतीयता देखनी हो तो दूर दर्शन पर 'खबरें' प्रसारण सुनें जिसकी फारसी युक्त भाषा हिन्दू तो हिन्दू ९९ प्रतिशित मुसलमान भी नही समझ सकते। आश्चर्य यह है कि इन राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का जन्म देने और लालन पालन करने वाले हिन्दू ही है मुसलमान नहीं। हामिद दलवाई ने ठीक कहा है : "मेरा स्पष्ट कहना यह है कि एक प्रकार के हिन्दू हैं जो मुसलमानों का विचार करने मात्र से भय खाते हैं। ,------------प्रत्येक संकटापन्न स्थिति में इस प्रकार के हिन्दू अपने को मुसलमानों से भी श्रेष्ठ मुसलमान होने का ढोंग करने लगते हैं। अपने इस व्यवहार से वह उन मुसलमानों के मार्ग में बाधा बन जाते है जो मुसलमानों में कट्टरपन कम करने के प्रयास कर रहे हैं।"-अनुवादक)

इस बात पर सब सहमत हैं कि भारत एक राष्ट्र बने। कदाचित इस बात पर भी सब सहमत हैं कि इस देश के निवासियों में एक राष्ट्र होने की भावना के विकास का अभी प्रादुर्भाव नहीं हुआ है। भारत की राष्ट्रीयता अभी केवल ३० वर्ष पुरानी है। आज भी यहाँ राष्ट्रीयता की स्पष्ट व्याख्या का नितांत अभाव है। यहाँ राष्ट्रीयता केवल एक बिन्दु पर आधारित है : "ब्रिटिश साम्राज्य वाद से छुटकारा"। इस कारण प्रत्येक भारतीय की राष्ट्रीयता उसके द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य वाद के विरुद्ध प्रयोग की जाने वाली भाषा की कटुता से नापी जाती है। यह मुद्दा पूरे राजनीतिक भारत के मस्तिष्क पर छाया हुआ है। दूसरा संदर्भ जिसमें राष्ट्रीयता शब्द का प्रयोग किया गया है वह आर्थिक संदर्भ है। किन्तु इस संदर्भ में भी वह नितांत अस्पष्ट और अपूर्ण है।

राष्ट्र का मापदंड

पश्चिम में राष्ट्र का माप दंड उसकी भाषा है किन्तु भारत में ऐसे तत्व उभर आये है जिन्होंने भाषा को पीछे ढकेल दिया है, यहाँ हिन्दू मुस्लिम प्रश्न शुद्ध राष्ट्रीयता के मार्ग में बाधा बन कर खड़ा हुआ है।

यह बड़े खेद का विषय है कि हिन्दू जो प्रत्येक परिभाषा के अनुसार इस देश के स्वामी हैं बौद्धिक रूप से बिल्कुल अ-हिन्दू हो गये हैं। फलस्वरूप नितांत अ-हिन्दू और राष्ट्र विरोधी विचारों को राष्ट्रीयता के नाम पर स्वीकार किया जा रहा है। इसका परिणाम हिन्दुओं के लिए आत्म हत्या है। विश्व के इतिहास में ऐसा कोई दूसरा राष्ट्र अथवा मजहब

(धर्म) नहीं है जिस में आत्म हत्या की इतनी-भर्त्सना की गई हो जितनी हिन्दू धर्म में की गई है। फिर भी हिन्दू समाज आत्म-हत्या पर कटिबद्ध है। इस गर्हित राष्ट्रीय पाप की जिम्मेदारी हिन्दू नेताओं (और धर्माचार्यो) पर है। साधारण हिन्दू समाज पर नहीं।

तलवार के भय से धर्मान्तरित

मुसलमानों को राष्ट्रीय धारा में लाने के स्थान पर जैसा कि टर्की और परशिया में हो रहा है भारत में विपरीत दिशा में प्रयास किये जा रहे हैं।

भारतीय मुसलमान विश्व-इस्लाम-वाद में विश्वास करते हैं जिसका अर्थ उनके लिये अरब-वाद हैं और हिन्दू निर्लज्जता से इस कार्य में उनके सहयोगी हैं।

इस बात का सब को ज्ञान होना चाहिये कि भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक पराभव अब से १००० वर्ष पहले प्रारम्भ हुआ था जब बर्बर मुसलमानों ने यहाँ पर आकर लूटमार की और असंगठित उत्तर भारत के कुछ भागों पर अपना अधिपत्य जमा लिया। इन पिछले १००० वर्षो में हिन्दुओं ने अपनी राजनीतिक सूझ-बूझ का कोई परिचय नही दिया। उत्तर पश्चिम से आई इन जंगली और असभ्य जातियों ने कौन सा अत्याचार नहीं किया ? उनमें से एक ने तो ऐसे अत्याचार किये जो संसार के किसी भी धर्म के नाम पर कलंक का टीका ही स्वीकार किये जायेगे। दरिद्रों, लाचारों और पद-दलितों को तलवार के सामने खड़ा कर दिया गया। उनके सामने दो ही विकल्प थे : विजेता का धर्म (इस्लाम) स्वीकार करना अथवा सिर कटवाना।

प्रेम इर्ष्यालु होता है।

भारत में आज की स्थिति इसी प्रक्रिया के फलस्वरूप उत्पन्न हुई है। तलवार के बल पर धर्मान्तरित इन लोगों की प्रेम और धर्म रज्जु उत्तर पश्चिम और पश्चिम के देशों से जुड़ी हुई है, भारत से नहीं। हमारे राजनीतिक नेता कष्टदायक और असुविधाजनक कटु सत्य का सामना करने को तैयार नहीं है। यदि भारत मे सच्चे राष्ट्रवाद का जन्म होना है तो इन परिस्थितियों को क्षण भर के लिए भी सहन न कर बदलना होगा।

प्रेम ईर्ष्यालु होता है यदि आप सत्य ही भारत को प्यार करते है तो आप दूसरे देश को प्यार नहीं कर सकते। हम में इतना साहस होना चाहिये कि भारत के समस्त नागरिकों को बतायें कि भारत ने उन्हें जन्म दिया है। भारत ने उनको सुरक्षा दी है। उनका लालन पालन किया है। इस कारण भारत उनसे अपेक्षा करता है कि वह एक मात्र भारत देश के प्रति वफादार हों। एक मात्र उसी से प्रेम करें और दूसरे देशों को विदेश से अधिक और कुछ न समझें।

भाषा का प्रश्न

जरा सोचें तो हिन्दू जैसे बुद्धिमान, वृद्ध और अनुभवी राष्ट्र का भाषा जैसे सरल और सहज प्रश्न पर भी दमन किया जा रहा है।

यदि हम अभी सत्य अर्थो में राष्ट्रीय नहीं हुये है और प्रत्येक भारतवासी को सच्चा राष्ट्रीय नही बना पाये है तो इसका कारण यह है कि हिन्दुओं को यथार्थ राष्ट्रीय नहीं बनने दिया जा रहा है। हम यह तो बड़े जोश खरोश से कहते हैं कि हम ब्रिटिश साम्राज्यवाद के सामने नत मस्तक नही होगे किन्तु हमें उतने ही जोश से यह भी कहना चहिये कि हम उन मुसलमानों द्वारा अपने पर लादी गई गुलामी के सभी चिन्ह मिटा देंगे जिनको मरे जमाना गुजर गया है और जो हमारे राष्ट्रीय इतिहास पर लगे कलंक के चिन्ह हैं।

पंजाब और भारत के दूसरे प्रान्तों में स्कूलों , न्यायालयों और प्रशासन में उर्दू का प्रयोग हो रहा है। कहा जा रहा है कि हिन्दी और उर्दू को मिला कर एक नई भाषा बनाई जाये जिसका नाम "हिन्दुस्तानी" रखा गया है । कोई नहीं जानता कि इस मिलावट की प्रक्रिया क्या होगी ? कोई नहीं जानता कि इस उर्दू में फारसी और अर्बी जैसी विदेशी भाषाओं के कितने शब्दों को आगे चल कर घुसेड़ा जाता रहेगा जिसके कारण वह फारसी अरबी अधिक और हिन्दुस्तानी कम होती चली जायगी। इस प्रकर का कोई नियम नहीं बनाया गया है। लिपि के विषय में कहा जा रहा है कि इस नई भाषा को लिखने के लिये देव नागरी अथवा फारसी कोई भी लिपि प्रयोग की जा सकती है। किन्तु भारत की दूसरी लिपियां जैसे बंगाली, गुजराती इत्यादि का प्रयोग नहीं किया जा सकता। यह बिल्कुल बेहूदी बात है।

अपने ही देश मे विदेशी

स्वाभिमान, स्वनिर्णय, स्व–विकास और स्वतंत्रता ही वह शब्द हैं जिनका अंततः हमारे राजनीतिक जीवन में किन्हीं सीमित अर्थो में नहीं अपितु असीमित अर्थो में उपयोग किया जाना होगा। किसी भी भारतीय भाषा को हम विदेशी लिपि में क्यों लिखे ? हम, जो अपनी राष्ट्रीयता पर गर्व करते है, फ़ारसी लिपि का उपयोग क्यों करें जो निश्चय ही विदेशी है ? क्या यह हमारे लिये स्थायी शर्म और बदनामी की बात नहीं होगी ? विदेशी वर्णमाला का उपयोग वही असभ्य लोग करते हैं जिनकी अपनी कोई वर्णमाला नहीं होती। क्या हम भविष्य में आने वाली अपनी पीढ़ियों को यह साक्ष्य विरासत में छोड़ना चाहते है कि हमारे पास लेखन के लिये अपनी कोई लिपि नहीं थी ? क्या यह हमारे लिये लज्जाजनक स्थिति नहीं है ?

हिन्दुओ ! यदि तुम इस देश के मुसलमानों में भारतीयता का संचार नहीं कर सकते तो तुम फारसी (उर्दू) करण अथवा अरबी करण द्वारा अपने को अपमानित, विकृत और भ्रष्ट क्यों होने देते हो ?राष्ट्रीय भारतीय होने के नाते यह सुनिश्चित करना हमारा कर्तव्य है कि इस देश का प्रत्येक नागरिक इस देश पर अभिमान करे। वह किसी भी दशा (और क्षेत्र) में इस पर किसी भी दूसरे देश द्वारा गुलामी लादे जाने में सहयोगी न बने। हमें लज्जा आनी चाहिये यदि कोई भी भारतीय शिशु विदेशी पुष्पों, चिड़ियों अथवा महापुरुषों के गीत गाये। हम अपने ही देश मे विदेशी बनते जा रहे है। इस प्रकिया का अंत होना चाहिये।

हमें कम से कम इतना साहसी तो होना ही चाहिये कि हम अपने लिये यह सुनिश्चित कर सकें कि हमारी किसी भी संतान का विदेशी करण नहीं होगा।

प्रत्येक हिन्दू बालिका को शुद्ध भारतीय बनाओ जिससे वह भविष्य में बनने वाले (हिन्दू) राष्ट्र की रीढ़ बन सके।

(मराठा ६-४-१९४० से उद्धृत)

"हिन्दुस्तान दारुल हर्ब (शत्रु देश) है। वह उस वक्त तक दारुल हर्ब रहेगा जब कि इस देश में कुफ्र को गल्बा (वर्चस्व) हासिल रहेगा।" (अर्थात जब तक इसमें गैर मुस्लिमों की हुकूमत रहेगी)-- "हिन्दुस्तान जब से इकतदारे-इस्लाम (इस्लामी सत्ता) खत्म हुआ, तब से ही दारुल हर्ब है-- (मौलाना हुसैन अहमद मदनी)"

"अत्यंत आवश्यक है कि इस निज़ामे खुदाबंदी (इस्लामी हुकूमत) को मजबूती से कायम किया जाए।-- उलमाए-हिन्द ने सदैव इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये कोशिश की है। परन्तु हाय दुर्भाग्य वास्तविक उद्देश्य पूरा न हो सका बस-- ज़रूरी प्रतीत हुआ कि आहवन-दल-बलियालैन- (दो मुसीबतों में से छोटी मुसीबत- के नियम को) अख्तियार किया जाय और हिन्दुस्तान की आजादी के लिये संयुक्त जद्दोजहद में हिस्सा लिया जाए।- और यद्यपि संयुक्त जद्दोजहद से प्राप्त होने वाली आजादी निजामें इस्लामी (इस्लामी हुकूमत) न कहला सकेगी, फिर भी बहुत सी कठिनाइयां और सख्त रुकावटों के दूर हो जाने से वास्तविक उद्देश्य के लिये रास्ता खुल जायेगा।"

(अध्यक्षीय भाषण, मौलाना हुसैन अहमद मदनी सालाना अधिवेशन जमीयते उल्माए हिन्द, लाहौर, १९४२)

मौलाना हुसैन अहमद मदनी स्वीकार करते थे कि हिन्दू मुसलमानों की संगठित राष्ट्रीयता, आजादी तथा समृद्धि के लिए संगठित प्रयास करना एक विशेष मामला है, जिसका ताल्लुक सिर्फ मुल्क हिन्दुस्तान और उसके बसनेवालों से और (उनके) सांसारिक जीवन से है। यह भावी स्थिति के सामने एक अर्जी (अस्थायी) और जिल्ली (अवास्तविक) चीज है और जब तक किसी मुल्क में भिन्न-भिन्न कौमें और मजहब बसते हैं, तभी उनकी ज़रूरत है। सब के सब मुसलमान हो जाने के बाद, जो कि औलीन (सबसे पहला) और असली मकसद (उद्देश्य) है, यह बाकी नहीं रहता। उन्होंने फरमाया कि मुसलमाने - हिन्द को दोनों मसलों पर पूरी तौर पर हिस्सा लेना ज़रुरी और लाज़मी (अनिवार्य) है। एक में हिस्सा लेना दूसरें के मुनाफी (वर्जित) नहीं है।

(मुकुट बिहारी लाल) : भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन भाग-२, पृ-५६९

विचित्र हिन्दू

लेखक-पुरुषोत्तम

यह हिन्दू-मुस्लिम एकता की प्रतीक ग़ाजी और शहीदों की मजारें-

भारत में सहस्रों कब्रें टेढ़ी-मेंढ़ी ईटों और प्लास्तर के ढेर मात्र से लेकर करोड़ों रुपयें की लागत से मकबरें, दरगाहें, और मजारें बिखरी पड़ी है जिनमें प्रति सप्ताह छोटे बड़े मेले लगते है और प्रति वर्ष उनकी हैसियत के अनुसार बड़े पैमाने पर उर्स होते हैं। इन अवसरों, पर कव्वालियाँ, बड़े-बड़े बाज़ार, चलते फिरते सिनेमा, पशु मेले इत्यादि भी लगते हैं जिनसे इन मज़ारों मकबरों इत्यादि के ट्रस्टियों को लाखों और करोड़ों रुपये वार्षिक की आय होती है। इन पर तीर्थ यात्रा करने और चढ़ावा चादर इत्यादि चढ़ाने वालों में ९०-९५ प्रतिशत हिन्दू होते है। इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि इस्लाम इस प्रकार की पूजा को बहुत बुरा समझता है।स्वयं पैगम्बर साहब की मजार पर भी इस प्रकार की पूजा अर्चना की अनुमति सऊदी शासन द्वारा नहीं दी जाती।

इन मेलों,उर्सों और ज्यारतों (तीर्थ यात्रा) का हिन्दू-मुस्लिम एकता के और हिन्दू मुस्लिम संस्कृति की गंगा-यमुना मिश्रित संस्कृति के प्रतीकों के रुप में बहुत प्रचार किया जाता है। मुख्य मज़ारों पर राष्ट्रपति , प्रधानमंत्री, गवर्नर, मुख्यमंत्री और मंत्री इत्यादि चादर चढ़ाते, उनसे दुआयें माँगते,फोटो खिंचा कर अपनी धर्मनिरपेक्षता के सबूत में छपवाते है।

किन्तु वास्तविकता क्या है?

जिन लोगों की यह मज़ारें या मकबरें है उनमें से अधिकांश के नाम के साथ गाज़ी, शहीद, पीर, सयद, सूफी जैसे शब्द जुड़े होते हैं। इन पर जाने वाले अधिकांश हिन्दू इन शब्दों का हिन्दू शब्द, महात्मा, बीर, गुरु, देवता, भक्त इत्यादि का पर्याय समझते है। इनके वास्तविक अर्थ क्या हैं? कौन हैं यह लोग जो सैकड़ों वर्षों से इन मज़ारों में सोये पड़े है और हिन्दुओं के इस असामान्य आदर के पात्र हैं ? इन उर्दू , फारसी शब्दों का वास्तविक अर्थ निम्नलिखित है :

गाज़ी — इस्लाम के लिए युद्ध करने वाला ऐसा वीर जिसने मूर्ति पूजकों अथवा बहुदेवता वादियों के वध का पुण्य अर्जित किया है।

शहीद — जो इस्लाम की सेवा में काफिरों अर्थात मूर्तिपूजकों अथवा बहुदेवता वादियों से युद्ध करते समय मारा गया हो।

उपरोक्त अर्थो को समझ लेने पर यह बताना आवश्यक नहीं कि यह मजार मकबरें, दरगाह घोर हिन्दू विरोधी और हिन्दू धर्म को नेस्तनाबूद करने के लिये कृत संकल्प लोगों के हैं जो मरने के सैकड़ो वर्षों के पश्चात भी हिन्दूओं को सफलता पूर्वक भ्रमित कर रहे है।

केवल दो तीन उदाहरण पर्याप्त होंगे।

१. बहराइच में शहीद सालार महमूद गाजी की मजार – यह सोमनाथ मंदिर को ध्वस्त करने वाले कुख्यात सुल्तान महमूद गजनवी की बहन का पुत्र था। उस की भारत के राजाओं से एक ही माँग थी : इस्लाम स्वीकार करो अथवा तलवार (देखें ईलियट एंड डाडसन भाग-२ परिशिष्ट) अंत में वह युद्ध में राजा सुहल देव के हाथ मारा गया। वहां का मुख्य तीर्थ स्थान सूरज कुंड बाद के मुसलमान शासकों द्वारा उसकी इच्छानुसार हथिया लिया गया।

२. लखनऊ के खम्मनपीर बाबा और शहीद कासिम बाबा – यह शहीद सालार महमूद गाजी के मित्र थे और लखनऊ में हिन्दू सेना द्वारा मारे गये।

३. मुइनुद्दीन चिश्ती– यह भारत के सर्वाधिक सूफी संत समझे जाते हैं। सालार महमूद की मृत्यु के पश्चात् अजमेर पर फिर हिन्दुओं का राज्य हो गया। मीरात (ए) मसूदी (ईलियर एंड डाडसन भाग-२) परिशिष्ट के अनुसार मुइनुद्दीन चिश्ती मदीने से भारत का इस्लामीकरण करने की प्रेरणा लेकर मसूद की मृत्यु के लगभग २०० वर्ष बाद भारत आकर अजमेर में बस गया। पृथ्वी राज चौहान (राय पिथौरा) का शासन काल था। चिश्ती ने राय पिथौरा के धर्म गुरु अजय पाल जोगी को अपना शिष्य (मुसलमान) बना लिया। किन्तु पृथ्वीराज धर्म परिवर्तन के लिये तैयार नहीं हुआ। अव मोहम्मद गौरी ने भारत पर चढ़ाई कर पृथ्वीराज को मार डाला। चिश्ती को प्रारम्भ में हिन्दुओं के विरोध का सामना करना पड़ा किन्तु कदाचित दिल्ली के मुस्लिम सुल्तान और दूसरे शासकों से निरन्तर मिलने जुलने और गहरे सम्वन्धों के कारण वह अजमेर में बैठकर हिन्दुओं का धर्मान्तरण करता रहा। इसने एक हिन्दू लड़की का भी धर्मान्तरण कर उससे विवाह किया। किन्तु सन्तान मुस्लिम पत्नी से ही हुई। ९७ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हुई पी.एम. करों की पुस्तक द श्राइन एंड कल्ट ऑफ मुइनुद्दीन चिश्ती के अनुसार चिश्ती सैय्यद वंशी थे, कट्टर धर्मनिष्ठ मुसलमान थे और हज्ज कर आये थे। "उनके भारत आने से इस्लाम का मार्ग प्रशस्त हो गया कुफ्र का अंधेरा मिट गया" अमीर खुर्द के शब्दों में :

"इसकी तलवार ने उस कुफ्र की भूमि में मूर्तियों के स्थान पर मस्जिद, मेहराब और मिम्मबर स्थापित कर दिये। अव वहां आरती के स्थान पर अजान सुनाई देती है।"

अफज़ल खाँ

यह बीजापुर के वह सिपह सलार थे जो शिवाजी को मारने गये थे किन्तु उनके हाथों मारे गये। बेग के कथनानुसार "आज महाराष्ट्र में महाबलेश्वर से थोड़ा दूर एक भव्य दरगाह में उनका शव दबा पड़ा है। वह शिवाजी से राज्य छीनने का धर्म निरपेक्ष युद्ध तो भले ही हार गये किन्तु साम्प्रदायिक मोर्चे पर आज भी लड़ रहें हैं। (मुस्लिम डिलेमा इन इण्डिया पृ० ८८)

सैय्यद अथर अब्बास अली रिज़वी "हिस्ट्री ऑफ सूफिज्म इन इंडिया में लिखते हैं- "पूजा करने वाले लाखों हिन्दुओं के लिये यह विल्कुल महत्वपूर्ण नहीं है कि (इन सूफियों ने) उनके कितने पूर्वजों का (इस्लाम स्वीकार न करने पर वध किया गया)।

इस्लाम को भारत में फैलाने के प्रयास में सहस्रों योद्धा हार कर भी इस विचित्र हिन्दू समाज के पूज्य वंने हुये हैं।

मुसलमानों को अपने भविष्य के बारे में चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

भूलिये नहीं हिन्दू धर्म के बिना भारत का कोई भविष्य नहीं ! हिन्दु धर्म वह भूमि है जिसमें भारत की जड़ें गहरी जमी हुई हैं और यदि उस भूमि से उसे उखाड़ा गया तो भारत वैसे ही सूख जायेगा जैसे कोई वृक्ष भूमि से उखड़ने पर सूख जाता है। भारत में अनेक मत, सम्प्रदाय और वंशों के लोग पनप रहे हैं; किन्तु उनमें से कोई भी न तो भारत के अतीत के उषाकाल में था, न उनमें से कोई राष्ट्र के रूप में उसके स्थायित्व के लिए अनिवार्यतः आवश्यक है। इनमें से प्रत्येक जैसे आया वैसे चला भी जायेगा, पर भारत भारत रहेगा। परन्तु यदि हिन्दु धर्म का लोप हो जाय तो भारत क्या रह जायेगा ? भूतकाल की केवल 'भौगोलिक अभिव्यक्ति', विनष्ट गौरव की एक धुँधली स्मृति ! भारत के इतिहास, साहित्य, कला, स्मारक, प्रत्येक पर हिन्दु धर्म की छाप अंकित है। यहाँ पारसियों का जरथुष्ट्रमत शरण माँगने आया और उसकी सन्तानों को यहाँ आश्रय और सत्कार प्राप्त हुआ; फिर भी हो सकता है जरथुष्ट्रमत चला जाय तो भी भारत बना रहेगा। बौद्धमत यहीं स्थापित हुआ, किन्तु बौद्धमत लुप्त हो गया, भारत फिर भी बना रहा। इस्लाम आया, आक्रमण की एक लहर आयी, आज मुसलमान भारतीय जनों के अंग के रूप में विद्यमान हैं और भारत के भविष्य के निर्माण के सहभागी होंगे; फिर भी इस्लाम चला जाय, तो भी भारत, भारत रहेगा। ईसाई मत आया, ईसाई इस भूमि पर शासन कर रहे हैं, यहां की गतिविधियों को प्रभावित करते हैं; फिर भी ईसाई मत चला जाय, तो भी भारत, भारत रहेगा। इन सबके आगमन के पूर्व भारत था, इनके निर्गमन के बाद भी यह रहेगा। परन्तु यदि हिन्दु धर्म गया, वह हिन्दु धर्म जो भारत का पालना रहा, जिसने बाल्यकाल से इस भारत का संगोपन किया, वह यदि गया तो भारत भूमिसात हो जायेगा, उसकी समाधि बन जायेगी, जैसे आज मिस्र और उसका धर्म है। फिर भारत किसी पुराविशेषज्ञ अथवा पौरातनिक की रुचि का विषय बन जायेगा, विच्छेदन योग्य शव बन जायेगा; देशभक्ति की वस्तु नहीं रहेगा, एक राष्ट्र नहीं रहेगा।

यदि आप हिन्दु धर्म को छोड़ देते हैं तो आप अपनी भारत माता के हृदय में छुरा भोंकते हैं। यदि भारतमाता के जीवन–रक्त स्वरूप हिन्दु धर्म निकल जाता है तो माता गतप्राण होगी। आर्य जाति की यह माता, यह पदभ्रष्ट जगत–साम्राज्ञी पहले ही आहत, क्षत–विक्षत, विजित और अवनत हुई है; किन्तु धर्म उसे जीवित रखे हुए हैं, अन्यथा उसकी गणना मृतों में हुई होती। यदि आप अपने भविष्य को मूल्यवान समझते हैं, अपनी मातृभूमि पर प्रेम करते हैं तो अपने प्राचीन धर्म की अपनी पकड़ छोड़िये नहीं, उस निष्ठा से च्युत न होइए जिस पर भारत का प्राण निर्भर है। हिन्दु धर्म के अतिरिक्त अन्य किसी धर्म की रक्त–वाहिनियाँ ऐसी शुद्ध स्वर्ण की, ऐसी अमूल्य नहीं हैं, जिनमें आध्यात्मिक जीवन का रक्त प्रवाहित किया जा सके।

मैं आपको यह कार्यभार सौंप रही हूँ; हिन्दू धर्म के प्रति निष्ठावान रहो, वही आपका सच्चा जीवन है। कोई धर्मभ्रष्ट, कलंकित हाथ आपको सौंपी गयी इस पवित्र धरोहर को स्पर्श न करे।

डॉ० एनी बेसेंट

श्री पुरुषोत्तम द्वारा लिखित निम्नलिखित पुस्तकें नीचे दिये गये मूल्य पर उपलब्ध हैं –

१ – मुस्लिम राजनीतिक चिंतन और आकांक्षायें (दूसरा संस्करण)
पृष्ठ २२० पेपर बैक रू० ६०–००
हार्ड बैक रू० १०५–००

२ – भारतीय संविधान और शरीयः रू० १५–००

३ – मुस्लिम एण्ड हिन्दू फन्डामेन्टलिज्म रू० ५–००
(संविधान सभा में बहस के उद्वरण)

४ – विचित्र धर्मनिरपेक्षता रू० ३–००

५ – एक बीबी की तलाश रू० १५–००
(ऐतिहासिक और सामाजिक कहानियाँ)

६ – अनुभव रू० १५–००

७ – महाप्रलय (एक सामाजिक उपन्यास) रू० ६०–००
(लगभग २२० पृष्ठ) (छप रहा है)

८ – भारत के इस्लामीकरण के चार चरण रू० ६०–००

९ – भारतीय मुसलमानों के हिन्दू पूर्वज (मुसलमान कैसे बने) रू० २०–००

१० -- १०० वर्ष जीऐं–सुख से जीऐं रू० १२०--००
(कठिन और अज्ञात रोगों की चिकित्सा)

११ – हिन्दू गौरव (लेखक – जगदम्बा प्रसाद वर्मा) रू० २०–००

1 - Hindu Muslim Problems Rs. 12-00

2 - National Integration and Muslim Minority Rs. 14-00
(Collection of articles appearing in organiser Delhi)
3rd Edition.

3 - Political Islam Rs. 5-00

4 - Muslim and Hindu Fundamentalism Rs. 5-00
(Whal it means and How it spreads ?)
with Relevant excerpts from Constituent
Assembly Debate.

5 - Must India Go Islamic ? (In Press) Rs. 80-00

6 - The Last Hindu Rs. 20-00

पुस्तक प्राप्ति का स्थान – माया देवी योग द्वारा श्री पी० एस० योग
ध्यान गंगा, मौसम बाग, सीतापुर रोड, लखनऊ।

मुद्रक – कल्प तरु प्रिन्टर्स एवं पैकेजर्स प्रा० लि०, किशोर बाजार,
मौसम बाग, सीतापुर रोड, लखनऊ। फोन--333628

मूल्य – रू० 7-00